कोरोना वायरस और

मसीह

जॉन पाइपर

कोरोना वायरस

और

मसीह

Other books by John Piper

The Dangerous Duty of Delight

Desiring God

Don't Waste Your Life

Fifty Reasons Why Jesus Came to Die

God Is the Gospel

A Hunger for God

Let the Nations Be Glad!

The Pleasures of God

Reading the Bible Supernaturally

Seeing and Savoring Jesus Christ

Spectacular Sins

A Sweet and Bitter Providence

What Jesus Demands from the World

When I Don't Desire God

Why I Love the Apostle Paul

कोरोना वायरस

और

मसीह

जॉन पाइपर

fortheruth.

Coronavirus and Christ

Copyright © 2020 by Desiring God Foundation

Published by Crossway
1300 Crescent Street
Wheaton, Illinois 60187

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or transmitted in any form by any means, electronic, mechanical, photocopy, recording, or otherwise, without the prior permission of the publisher, except as provided for by USA copyright law. Crossway® is a registered trademark in the United States of America.

Coronavirus and Christ is translated in Hindi and is printed and distributed in India on behalf of "Desiring God Foundation" by "For the Truth."

First Hindi printing 2020

Printed in India

Unless otherwise indicated, Scripture quotations are from the IBP Bible.

All emphases in Scripture quotations have been added by the author.

"For the Truth" is a publishing company which exists to print, publish & distribute resources for the Church in India.

कोरोना वायरस और मसीह का हिन्दी अनुवाद, तथा भारत में छापाई और वितरण *"फॉर द ट्रूथ"* द्वारा, *"डिज़ायरिंग गॉड फाउंडेशन"* के लिए किया गया है।

प्रथम हिन्दी छपाई 2020

भारत में छापी गयी

सभी बाइबल उद्धरण *IBP* बाइबल से लिए गए हैं।

"फॉर द ट्रूथ" एक प्रकाशन कंपनी है जो भारत में कलीसिया के लिए संसाधनों को प्रकाशित करने और छापने तथा उनका वितरण करने के लिए बनाई गयी है।

विषय सूची

वर्तमान परिस्थिति: कोरोना वायरस 7

भाग 1: वह परमेश्वर जो कोरोना वायरस पर प्रभुता करता है

1. चट्टान के निकट आओ.. 11
2. एक दृढ़ नींव 21
3. यह चट्टान धर्मी है... 29
4. सब बातों पर सार्वभौमिक.. 37
5. उसके प्रभुत्व की मधुरता 45

भाग 2: परमेश्वर कोरोना वायरस के द्वारा क्या कर रहा है?

प्रारम्भिक विचार: देखना और संकेत करना................................ 55

6. नैतिक भयानकता का दृश्य 61
7. विशेष ईश्वरीय न्याय को भेजना..................................... 69
8. द्वितीय आगमन के लिए हमें जागृत करना 73
9. हमें पुनः मसीह के असीम मूल्य की ओर फेरना................ 77
10. संकट के समय में भले कार्य करना 87
11. सभी राष्ट्रों में पहुंचने के लिए जड़ों को हिलाना............... 95

एक अंतिम प्रार्थना.. 99
नोट्स 101
डिज़ायरिंग गॉड के विषय में.. 107
फॉर द ट्रूथ के विषय में 109

वर्तमान परिस्थिति: कोरोना वायरस

मैं इस छोटी पुस्तक को मार्च 2020 के अंतिम दिनों में लिख रहा हूँ। यह उस वैश्विक महामारी का आरम्भिक दौर है जिसे कोरोना वायरस के रूप में जाना जाता है तथा इसे तकनीकी तौर पर, *"कोरोना वायरस डिज़ीज़ 2019"* (संक्षिप्त में *COVID-19)* कहा जाता है। यह वायरस फेफड़ों को प्रभावित करता है, और अंततः संक्रमित व्यक्ति को दम घोंट के मार देता है।

इस वायरस से पहली मृत्यु चीन में 11 जनवरी, 2020 को हुई थी। और आज जब मैं यह पुस्तक लिख रहा हूं, तब तक संसार भर में कई लाख लोग इस वायरस से संक्रमित हो चुके हैं, और हज़ारों लोगों की मृत्यु भी हो चुकी है। अभी तक—इसका कोई उपचार नहीं मिला है।

जब तक आप इस पुस्तक को पढ़ेंगे, तब तक आपके पास इस परिस्थिति के बारे में मुझसे अधिक जानकारी होगी। इसलिए मुझे वायरस के फैलाव को रोकने के लिए किए जा रहे उपायों या आर्थिक मंदी से निपटने के लिए किए

गए प्रयासों के विषय में बात करने की आवश्यकता नहीं है। सामाजिक मिलना-जुलना, यात्रा, सम्मेलन, कलीसिया की सभाएँ, *थिएटर*, भोजनालय, खेल आयोजन और व्यवसाय ठप हो रहे हैं।

यह अभूतपूर्व घटना नहीं है—चाहे विश्व स्तर पर या अमरीकी स्तर पर। 1918 के वैश्विक *इन्फ्लूएंज़ा* महामारी में (रोग नियंत्रण केंद्रों के अनुमान के अनुसार), दुनिया भर में पांच करोड़ लोग मारे गए थे।[1] उनमें से पांच लाख से अधिक तो संयुक्त राज्य अमरीका में ही थे। लोगों को सुबह बीमारी के लक्षण महसूस होते थे और रात तक उनकी मृत्यु हो जाती थी। शवों को घरों के आंगन से उठा कर *बुलड़ोज़र* जैसी मशीनों द्वारा खोदी गई क़ब्रों में गाड़ दिया जाता था। *मास्क* न पहनने के कारण किसी एक व्यक्ति को गोली भी मार दी गई थी। सारे स्कूल बंद थे। पास्टर लोग हर-मगिदोन के युद्ध (अंतिम महायुद्ध) की बात करते थे।

यह बात तो सत्य है कि भूतकाल की घटनाएँ कुछ साबित नहीं करती हैं। वह तो केवल चेतावनियां ही हैं न कि हमारी नियति। फिर भी ऐसे समय में हमें यह देखने को मिलता है कि यह संसार कितना क्षणभंगुर है। दृढ़ प्रतीत होने वाली नींवें अब हिल रही हैं। हमें यह प्रश्न पूछना चाहिए कि क्या हमारे पैरों तले कोई दृढ़ **च**ट्टान है? एक ऐसी **च**ट्टान जिसे—कभी भी हिलाया नहीं जा सकता है?

भाग 1

वह परमेश्वर जो कोरोना वायरस पर प्रभुता करता है

अध्याय 1

चट्टान के निकट आओ

मैं यह पुस्तक लिखने के लिए इसलिए प्रेरित हुआ हूँ क्योंकि केवल सम्भावनाओं पर आशा रखना मानो किसी निर्बल बात पर भरोसा करना है। चाहे मृत्यु दर 3 प्रतिशत या 10 प्रतिशत हो, चाहे कोई व्यक्ति युवा हो या वृद्ध हो, कमज़ोर स्वास्थ्य वाला हो या हष्ट-पुष्ट हो, गांव का हो या शहरी हो, स्वयं एकान्तवास में हो या घर पर मित्रों के साथ हो। ऐसी सम्भावनाओं पर भरोसा करने से बहुत ही कम आशा मिलती है। इस तरह की बातें आपको स्थिरता प्रदान नहीं करती हैं।

परन्तु एक उत्तम मार्ग है। एक उत्तम स्थान है खड़े होने के लिए: सम्भावनाओं की रेत के स्थान पर निश्चयता की **च**ट्टान पर भरोसा करना।

जब मुझे कैंसर हुआ

मुझे याद है 21 दिसंबर, 2005 का वह दिन जब मुझे बताया गया कि मुझे *प्रौस्टेट* कैंसर है। अगले कई सप्ताहों तक हर एक वार्तालाप सम्भावनाओं के विषय में थी। समय के साथ बीमारी के ठीक होने की सम्भावना। विभिन्न दवाओं के लाभ की सम्भावनाएं। होम्योपैथिक प्रक्रियाओं के फायदे की सम्भावनाएं। जटिल ऑपरेशन की सफलता की सम्भावना। मेरी पत्नी नोएल

और मैंने इन आंकड़ों को गंभीरता से लिया। परन्तु शाम को हम एक-दूसरे को देखकर मुसकुराते थे और सोचते थे कि, *हमारी आशा सम्भावनाओं पर नहीं है। हमारी आशा तो परमेश्वर पर है।*

हमारा तात्पर्य यह *नहीं* था कि, "यह बात 100 प्रतिशत निश्चित है कि परमेश्वर मुझे चंगा करेगा, जबकि डॉक्टर मुझे केवल सम्भावनाएं ही दे सकता है।" क्योंकि हम जिस **च**ट्टान की बात कर रहे हैं, वह इस बात से भी उत्तम है। हाँ, चंगाई से भी उत्तम है।

इस से पहले कि डॉक्टर मुझे फ़ोन करके बताता कि मुझे कैंसर है, परमेश्वर ने अद्भुत रीति से मुझे उस **च**ट्टान के विषय में स्मरण दिलाया था जो मेरे पैरों तले है। मेरी सामान्य वार्षिक *मेडिकल* जाँच के बाद, मूत्र रोग विशेषज्ञ ने मेरी ओर देखा और कहा, "मैं आपकी *बायोप्सी* जाँच करना चाहूँगा।"

मैंने सोचा; *सच में?* "कब?"

"अभी, यदि आपके पास समय है।"

"मैं समय निकाल सकता हूँ।"

जब उधर डॉक्टर मशीन लेने के लिए गया, तो मैं इधर अस्पताल के कपड़े पहनने लगा। और उसी समय मैं इस घटना के बारे में विचार करने लगा। और मेरे मन में यह विचार आया: *तो यह डॉक्टर सोच रहा है कि मुझे कैंसर हो सकता है।* और फिर मेरी आँखों के सामने इस संसार में मेरा भविष्य बदलने लगा, तब परमेश्वर ने मुझे एक बात स्मरण दिलाई जिसे मैंने हाल ही में बाइबल में पढ़ा था।

परमेश्वर ने कहा

अब, यह बात तो स्पष्ट करना चाहता हूँ। मैं आवाज़ें नहीं सुनता हूँ। कम से कम मैंने अभी तक तो नहीं सुनी हैं। मेरा यह भरोसा है कि परमेश्वर बातें

करता है। यह बात इस तथ्य पर आधारित है कि बाइबल उसका वचन है। (इस विषय पर हम अगले अध्याय में और अधिक विचार करेंगे।) वह बोल चुका है, एक बार हमेशा के लिए, और वह अभी भी अपने वचन के द्वारा बातें करता है। बाइबल को यदि सही तरीके से समझा जाए, तो वह परमेश्वर की वाणी *है।*

जब मैं डॉक्टर के कमरे में उस जाँच की प्रतीक्षा कर रहा था जिसके द्वारा यह पुष्टि होती कि मुझे कैंसर है उस समय परमेश्वर ने मुझसे यह कहा। "जॉन पाइपर, यह मेरा प्रकोप नहीं है। चाहे तुम जीवित रहो या मर भी जाओ, तौभी तुम मेरे साथ रहोगे।" यह तो मेरे शब्द हैं परन्तु वास्तव में उसने यह कहा था:

> परमेश्वर ने हमें प्रकोप के लिए नहीं, परन्तु हमारे प्रभु यीशु के द्वारा उद्धार प्राप्त करने के लिए ठहराया है, जो हमारे लिए मर गया कि चाहे हम जागते या सोते हों, हम सब मिलकर उसके साथ जीवित रहे। (1 थिस्सलुनीकियों 5:9-10)

जागते या सोते हो—अर्थात जीवित रहूँ या मर जाऊँ—तौभी मैं परमेश्वर के साथ जीवित रहूँगा। ऐसा कैसे हो सकता है? मैं तो एक पापी हूं। मैंने कभी भी अपने जीवन का कोई भी दिन—*एक भी* दिन नहीं—परमेश्वर के प्रेम और पवित्रता के स्तर के अनुसार नहीं बिताया है। तो यह कैसे सम्भव है? परमेश्वर कैसे यह कह सकता है कि, "तुम, जॉन पाइपर—चाहे तुम जीवित रहो या मर भी जाओ—तुम मेरे साथ रहोगे?"

इससे पहले कि मैं प्रश्न पूछ पाता, परमेश्वर ने उत्तर दिया कि यह तो यीशु के कारण है। केवल यीशु के कारण। उसकी मृत्यु के कारण, मेरे प्रति कोई प्रकोप नहीं होगा। यह मेरी सिद्धता के कारण नहीं है। मेरे पाप, मेरा दोष और

मेरा दण्ड, मेरे उद्धारकर्ता यीशु मसीह पर डाल दिए गए। वह "हमारे लिए मर गया।" उसका वचन यही बात कहता है। इसलिए, मैं दोष से तथा दण्ड से स्वतंत्र हूँ। मैं परमेश्वर की दया से परिपूर्ण कृपा में सुरक्षित हूँ। चाहे "जीवित रहो या मर भी जाओ," परमेश्वर ने कहा है कि, "तुम मेरे साथ रहोगे।"

यह कैंसर—अथवा कोरोना वायरस से जुड़ी हुई विभिन्न सम्भावनाओं की बातों से बहुत भिन्न है। यह मेरे पैरों तले एक दृढ़ **च**ट्टान है। यह कमज़ोर नहीं है। यह बालू नहीं है। मैं चाहूँगा कि यह आपके भी पैरों तले **च**ट्टान हो। इसी कारण मैं यह पुस्तक लिख रहा हूं।

क्या दृढ़ चट्टान मात्र भविष्य में है?

परन्तु केवल इतना ही नहीं। कोई व्यक्ति इसे पढ़ कर यह कह सकता है कि, "आपके जैसे धार्मिक लोग मात्र भविष्य में ही आशा रख सकते हैं। यदि वे कब्र में जाने के बाद सुरक्षित हैं, तो उनके पास वह है जिसको वे चाहते हैं। परन्तु जिस 'परमेश्वर की वाणी' की बात वे अभी करते हैं उसका वर्तमान से कम वास्ता है। परमेश्वर ने सृष्टि में सब कुछ का आरम्भ किया है, तो मुझे लगता है कि वह सब बातों का सुखद अंत भी करेगा। कहाँ है वह—इस समय, अभी कोरोना वायरस के प्रकोप के मध्य में?"

यह बात सत्य है कि मैं मृत्यु के बाद परमेश्वर की उपस्थिति में खरबों वर्षों के अनन्त आनन्द को अत्यधिक महत्व देता हूँ। अनन्त क्लेश के विपरीत। और यह बात मुझे समझदारी लगती है। परन्तु जो **च**ट्टान मेरे पैरों तले है (जिसे मैं आप के साथ बाँटना चाहता हूँ) वास्तव में वह *इस* क्षण मेरे पैरों तले है। हाँ अभी, इसी क्षण!

मैं जहाँ रह रहा हूँ वहाँ कोरोना वायरस की महामारी फैली हुई है। हम सभी जहाँ रहते हैं। और यदि यह कोरोना वायरस नहीं होता, तो वह कैंसर

होता जो पुनः लौट कर आने की प्रतीक्षा में होता। या फिर 2014 में अचानक उत्पन्न हुए फेफड़ों की बीमारी होती जो कि मेरे मस्तिष्क में फैलने की ताक में रहती, ताकि मुझे बुद्धिहीन व्यक्ति में बदल दे जो कभी एक वाक्य भी नहीं लिख पाता। या सैंकड़ो ऐसी अनदेखी आपदायें जो मुझे—और आपको—किसी भी क्षण नीचे गिरा सकती हैं।

मैं जिस **च**ट्टान की बात कर रहा हूँ, वह इस समय मेरे पैरों तले है। मैं ऐसा *कह सकता हूँ* कि **च**ट्टान अभी मेरे पैरों तले है क्योंकि कब्र के बाद की आशा वास्तव में *वर्तमान* की आशा है। आशा की *वस्तु* भविष्य में है। परन्तु आशा का *अनुभव* वर्तमान में है। और यह वर्तमान का अनुभव सामर्थ्य से परिपूर्ण है।

आशा ही सामर्थ्य है। वर्तमान की सामर्थ्य। आशा ही वर्तमान में—लोगों को आत्महत्या करने से रोकती है। यह वर्तमान में—लोगों की बिस्तर से बाहर निकलने और कार्य पर जाने में सहायता करती है। यह वर्तमान में—हमारे दैनिक जीवन को अर्थ प्रदान करती है, यहां तक कि *लॉक-डाउन, क्वारंटीन,* घर-पर-रहने वाले जीवन में भी। यह वर्तमान में—भय और लालच के स्वार्थ से मुक्त करती है। यह वर्तमान में—प्रेम करने और जोखिम लेने और बलिदान देने हेतु बल प्रदान करती है।

तो इसलिए भविष्य की बातों को तुच्छ समझने से पहले सावधान रहें। ऐसा सम्भव है कि जब आपका भविष्य सुन्दर और निश्चित होगा, तभी आप का यहाँ का वर्तमान भी मधुर और फलदायी होगा।

वायरसों में उसका हाथ

यह बातें मैं परमेश्वर के उस मधुर वचन “जीवित रहो या मर भी जाओ, तौभी तुम मेरे साथ रहोगे” के बचाव में *कह सकता* था जो कि मुझे डॉक्टर के कमरे

में स्मरण आई थी। इस तरह की आशा (यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण) मुझे *वर्तमान में* —प्रेरित करती है दूसरों की भलाई हेतु अपना जीवन उण्डेल देने के लिए—विशेष तौर से उनके अनन्त भले के लिए। यह बात मुझे अपने जीवन को व्यर्थ न गवाँने के लिए उत्साहित करती है। यह अनिश्चयता को हटाती है। यह मुझे यीशु मसीह की महानता का प्रसार करने के लिए एक उत्साह से भर देती है। यह मुझे खर्च करने और खर्च हो जाने के लिए प्रेरित करती है (2 कुरिन्थियों 12:15) ताकि मैं अपने साथ अधिक से अधिक लोगों को अनन्त आनन्द में ला सकूँ।

यद्यपि मैं यह सब *कह सकता हूँ*, तौभी जब कोई आपत्ति उठाता है कि पाइपर का परमेश्वर केवल भविष्य की बातों में निपुण है, न कि वर्तमान की बातों में, तब केवल इतना ही कहना पर्याप्त नहीं होगा।

बल्कि, हो सकता है कि मैं जो कहने वाला हूं उसके कारण कोई यह आपत्ति करे कि, "अरे! यहाँ तो परमेश्वर की वर्तमान में अत्यधिक भागीदारी है। पहले आपका परमेश्वर केवल भविष्य से वास्ता रखता था परन्तु अब तो वायरसों में भी आपके परमेश्वर का हाथ है।"

"मैं ठीक हूँ" नहीं, किन्तु "मुझे ठीक लग रहा है"

आइए इसे इस प्रकार से समझते हैं। कैंसर होने से पहले लोग मुझसे अक्सर पूछते थे कि, "आपका स्वास्थ्य कैसा है?" और मैं उत्तर देता था कि, "मैं ठीक हूँ।" मैं अब इस तरह से उत्तर नहीं देता हूँ। मैं कहता हूँ कि, "मुझे ठीक लग रहा है।" दोनों बातों में अन्तर है। उस वार्षिक *मेडिकल* जाँच के लिए जाने से पहले, मुझे लग रहा था कि *मैं ठीक हूँ।* अगले दिन मुझे बताया गया कि मुझे कैंसर है। दूसरे शब्दों में, *मैं ठीक नहीं था।* तो जबकि मैं इन शब्दों को लिख रहा हूँ, तो मैं यह नहीं जानता कि मैं ठीक हूँ, कि नहीं। मुझे ठीक-ठाक

लग रहा है। प्रभु की दया से, मेरी योग्यता से कहीं बढ़कर। क्या पता कि, मुझे अभी भी कैंसर हो। या फिर हो सकता है कि खून के थक्के मेरे शरीर में हो। या फिर कोरोना वायरस।

मैं कहना क्या चाह रहा हूँ? मुख्य बात यह है कि: हमें इस कारण यह नहीं कहना चाहिए कि "*मैं ठीक हूँ,*" क्योंकि केवल परमेश्वर ही जानता है और यह निर्धारित करता है कि आप ठीक हैं या नहीं—वह भी वर्तमान में। ऐसा कहना कि, "मैं ठीक हूँ," तब, जब कि आप नहीं *जानते* कि क्या आप वास्तव में ठीक हैं, और जब कि आप इस बात को *नियंत्रित* नहीं कर सकते हैं कि आप ठीक रहेंगे भी कि नहीं, यह ऐसा कहने के समान है जैसे कि, "कल, मैं दिल्ली जाऊँगा और वहाँ व्यापार करूँगा," जबकि आप जानते ही नहीं हैं कि आप कल जीवित भी रहेंगे या नहीं, दिल्ली जा कर व्यापार करना तो दूर की बात है।

इस तरह के कथन के विषय में बाइबल कुछ इस प्रकार कहती है:

> सुनो, तुम जो यह कहते हो, 'आओ, हम आज या कल अमुक नगर में जाकर वहां एक वर्ष बिताएंगे और व्यापार करके लाभ उठाएंगे,'— फिर भी यह नहीं जानते कि कल तुम्हारे जीवन का क्या होगा। तुम तो भाप के समान हो, जो थोड़ी देर तक दिखाई देती और फिर अदृश्य हो जाती है। पर इसके विपरीत तुम्हें यह कहना चाहिए, 'यदि प्रभु की इच्छा हो तो हम जीवित रहेंगे और यह अथवा वह काम भी करेंगे।' (याकूब 4:13-15)

तो क्या केवल भविष्य की बातों से वास्ता रखने वाला परमेश्वर एकाएक लुप्त हो गया। बाइबल के सत्य की प्रकाशमय किरणों का हमारे व्यक्तिगत विचारधाराओं की क्षणभंगुर ओस पर ऐसा ही प्रभाव होता है।

जैसा वह निर्णय करता है, वैसा ही हम करते हैं

मैं जिस **च**ट्टान पर खड़ा हूं (और मैं चाहता हूँ कि आप भी उस पर खड़े हों), वह *अब* और *सदा के लिए* संसार में परमेश्वर के कार्यों की **च**ट्टान है। बाइबल कहती है कि, "यदि प्रभु की इच्छा हो, तो हम जीवित रहेंगे।" अब इससे कितना अधिक वर्तमान में परमेश्वर कहाँ शामिल हो सकता है? केवल इतना ही नहीं कि, "तुम जीवित रहो या मर भी जाओ, तौभी तुम परमेश्वर के साथ रहोगे।" किन्तु इसके साथ ही साथ, "परमेश्वर ही यह तय करेगा कि आप अभी—जीवित रहेंगे या मर जायेंगे।"

और केवल जीवित रहना या मर जाना ही नहीं। वह इससे भी अधिक शामिल है "यदि प्रभु की इच्छा हो तो हम . . . *यह कार्य अथवा वह कार्य करेंगे।"* "यह अथवा वह" में कोई भी बात बची नहीं है। वह सब बातों में पूर्णतः सम्मिलित है। पूरी तरह से। *यह* स्वास्थ्य, या *वह* बीमारी। *यह* आर्थिक पतन, या *वह* संपन्नता। *यह* सांस चले, या फिर यह सांस रुक जाए।

इसका अर्थ है कि जब मैं जाँच की मशीन के आने के लिए डॉक्टर के कमरे में प्रतीक्षा कर रहा था, परमेश्वर मुझसे कह सकता था कि (जैसा कि उसने बाद में किया), "मत डरो। चाहे जीवित रहो या मर भी जाओ, तौभी तुम मेरे साथ रहोगे। *और* इसके मध्य में, जब तक तुम जीवित हो, तुम्हें ऐसा कुछ भी नहीं होगा—ऐसा कुछ भी नहीं!—जिसे मैंने नियुक्त नहीं किया है। यदि मैं निर्धारित करूँगा, तो तुम जीवित रहोगे। या, यदि मैं निर्धारित करूँगा, तो तुम मर जाओगे। और जब तक तुम मेरे निर्णय के अनुसार मर नहीं जाते, तब तक मैं निर्धारित करूँगा कि तुम यह करोगे या फिर वह करोगे। अब अपने कार्य पर लग जाओ।"

यह है मेरी **च**ट्टान—आज, कल और अनन्त काल के लिए।

चट्टान के निकट आओ

यह पुस्तक मेरी ओर से आप के लिए निमंत्रण है कि आप मेरे साथ उस दृढ़ **च**ट्टान यीशु मसीह से भेंट करें। मेरी आशा है कि इसका अर्थ और भी स्पष्ट हो जाएगा। मेरा उद्देश्य यह दर्शाना है कि इतिहास के इस समय में—कोरोना वायरस की इस महामारी के मध्य में—कैसे मसीह में होकर परमेश्वर एक **च**ट्टान है तथा उसके सामर्थी प्रेम पर खड़े होने का आभास कैसा होता है।

अध्याय 2

एक दृढ़ नींव

यह बात बहुत महत्वपूर्ण नहीं है कि मैं कोरोना वायरस के बारे में क्या सोचता हूं—या फिर किसी भी वस्तु के विषय में। परन्तु यह बात सर्वदा मायने रखती है कि परमेश्वर के क्या विचार हैं। और जो कुछ भी वह सोचता है वह उसके विषय में शान्त नहीं है। बाइबल में शायद ही कोई ऐसा पृष्ठ होगा जो कि इस संकट के लिए अर्थ न रखता हो।

दृढ़ एवं मधुर

मेरी वाणी घास की नाई है। परन्तु परमेश्वर के वचन *ग्रेनाइट* पत्थर के समान हैं। "घास सूख जाती है, और फूल झड़ जाता है, परन्तु प्रभु का वचन युगानुयुग स्थिर रहता है" (1 पतरस 1:24–25)। यीशु ने कहा कि पवित्रशास्त्र में परमेश्वर के वचन का "खण्डन नहीं किया जा सकता" (युहन्ना 10:35)। परमेश्वर जो कहता है वह "सत्य है और पूर्णतः धर्ममय है" (भजन 19:9)। इसलिए उसका वचन जीवन के लिए एक दृढ़ आधार है। "तू ने [चेतावनियों की] नींव सदा के लिए डाली है" (भजन 119:152)। परमेश्वर की बात सुनना, और उस पर विश्वास करना, चट्टान पर अपना घर बनाने के समान है, बालू पर नहीं (मत्ती 7:24)।

उसके वचनों की सम्मति ऐसी है कि आप उन पर ध्यान देना चाहेंगे। "जो अद्भुत युक्ति करनेवाला और अत्यन्त बुद्धिमान है" (यशायाह 28:29)। "उसका ज्ञान असीम है" (भजन 147:5)। जब वह कोरोना वायरस के विषय में सम्मति देता है, तो उसकी सम्मति दृढ़, अटल और स्थायी होती है। "यहोवा की युक्ति सर्वदा स्थिर रहती है" (भजन 33:11)। "परमेश्वर का मार्ग तो सिद्ध है" (2 शमुएल 22:31)।

इसलिए, उसके वचन मधुर और अनमोल हैं। "वे सोने से, हाँ बहुत से ताए हुए सोने से भी अधिक मनभावने हैं: . . . टपकने वाले छत्ते से भी अधिक मधुर है" (भजन 19:10)। वास्तव में, वे अनन्तकाल के जीवन की मिठास हैं: "प्रभु, हम किस के पास जाएं? अनन्त जीवन की बातें तो तेरे ही पास हैं" (यूहन्ना 6:68)।

इसलिए, भले और बुरे समय में भी, परमेश्वर का वचन असीम शान्ति और आनन्द लाता है। और निश्चित रूप से ऐसा ही होना चाहिए। मेरी प्रार्थना यह है कि इस पुस्तक को पढ़ने वाले सभी लोग यिर्मयाह भविष्यवक्ता के साथ यह अनुभव करेंगे कि: "तेरे वचन मेरे हृदय के लिए आनन्द और हर्ष के कारण बने हैं" (यिर्मयाह 15:16)।

और इस बात पर ध्यान दें कि: परमेश्वर के वचन की मिठास इस कड़वे प्रावधान के ऐतिहासिक क्षण में कहीं खो न जाए—ऐसा तब नहीं होगा अगर हम इस रहस्य को जान जाएँ कि हम, "शोकितों के सदृश परन्तु सदैव आनन्द मनाते हैं" (2 कुरिन्थियों 6:10)। हम आगे पूरी तरह से देखेंगे कि यह रहस्य क्या है परन्तु यहाँ पर यह बात अभी मात्र एक ही वाक्य में है। यह बात कि "शोकितों के सदृश परन्तु सदैव आनन्द मनाते हैं" का रहस्य यह है कि: *हमें यह ज्ञात है कि वह सार्वभौमिकता जो कोरोना वायरस को रोक सकती है, परन्तु नहीं रोक रही है, यह वही सार्वभौमिकता है जो हमारे प्राण को इसके*

मध्य में भी संभाले रहती है। वास्तव में तो, सम्भालने से कहीं अधिक बढ़कर इसको और—मधुर बनाती है। यह इस आशा के साथ मधुर बनाती है कि परमेश्वर के उद्देश्य दया से पूर्ण हैं, यहां तक कि मृत्यु में भी—उन लोगों के लिए जो उस पर भरोसा करते हैं।

आपको कैसे पता?

अब अति आवश्यक प्रश्न यह है कि हम कैसे जानते हैं कि बाइबल परमेश्वर का वचन है? मेरा संक्षिप्त उत्तर यह है कि इसमें से एक अद्भुत ईश्वरीय महिमा चमकती है, जो आपके हृदय में परमेश्वर के आकार के सांचे के साथ सटीक रीति से *फिट* बैठती है—जैसे कि ताला और चाभी, हाथ और दस्ताने, मछली और पानी, पंख और हवा, एवं एक पहेली की आख़िरी कड़ी।

इस विचार के प्रति उत्तर में कोई ऐसा कह सकता है कि, "यह रहस्यवादी तथा व्यक्तिनिष्ठ विचार प्रतीत होता है। आप ऐसा उत्तर क्यूँ दे रहे हैं?"

क्योंकि लगभग पचास साल पहले, जब मैं यह जानने के लिए संघर्ष कर रहा था कि मुझे अपने जीवन का निमार्ण किस आधार पर करना चाहिए, तो मैंने यह आभास किया कि बाइबल के पक्ष में विद्वत्तापूर्ण और ऐतिहासिक तर्क-वितर्क संसार के अधिकांश लोगों को रास नहीं आयेगा। आखिर ऐसा क्यों? क्योंकि, जहाँ एक मायने में यह तर्क सही एवं उपयोगी है, वहीं दूसरी तरफ यह एक आठ-साल-के बच्चे, तथा एक दूर-दराज़ जंगल में रहने वाले अशिक्षित आदिवासी या एक कम औपचारिक शिक्षा प्राप्त व्यक्ति की समझ से परे है। और फिर भी मुझे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि परमेश्वर की मनसा थी कि ऐसे लोग भी उसके वचन को सुनें और विश्वास करें—बिना अंधेरे में छलांग लगाए।

बाइबल का विश्वास अंधेरे में छलांग लगाना नहीं है

विश्वास के विषय में बाइबल का जो दृष्टिकोण है वह अंधेरे में छलांग लगाने जैसा नहीं है। यह परखा हुआ और अच्छी नींव पर आधारित है। इसे *विश्वास* इसलिए नहीं कहा जाता है क्योंकि इसका कोई आधार नहीं है। इसे *विश्वास* इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसमें भरोसा सम्मलित है। यीशु ने *विश्वासियों* को अंधा नहीं कहा; किन्तु उसने *अविश्वासियों* को अंधा कहा (मत्ती 15:14)। "वे देखते हुए भी नहीं देख पाते हैं" (मत्ती 13:13)। परमेश्वर के वचन में बचाने वाला विश्वास "दृष्टि" पर आधारित है। वास्तव में देखना।

किस बात को देखना? बाइबल इसका उत्तर इस प्रकार देती है कि: शैतान हर सम्भव प्रयास करता है कि "उन अविश्वासियों की बुद्धि को अंधा कर दे ताकि वे परमेश्वर के प्रतिरूप अर्थात् मसीह के तेजोमय सुसमाचार की ज्योति को न *देख* सकें" (2 कुरिन्थियों 4:4)।

दूसरे शब्दों में, उद्धार के विषय में बाइबल की कथा—एक प्रकार की आत्मिक ज्योति है जो सुसमाचार के माध्यम से चमकती है। यह कैसी ज्योति है? यह ज्योति तो ऐसी है जो, "मसीह की महिमा, अर्थात परमेश्वर का स्वरूप है।" यह कोई जादू नहीं है। यह रहस्मयी उस मायने में नहीं है कि जो वास्तव में वहां नहीं है वैसा प्रतीत हो। यीशु मसीह एक ऐसा ईश्वरीय-मानव व्यक्ति है जिसकी नैतिक, आत्मिक और अलौकिक महिमा अर्थात उसकी सुंदरता, मूल्य और महानता परमेश्वर के वचन के द्वारा प्रकाशमान होती है। और इस प्रकिया के द्वारा पवित्रशास्त्र का सत्य प्रमाणित होता है।

आपके प्राण में परमेश्वर रूपी आकार का सांचा

इसी कारण मैं कहता हूं कि पवित्रशास्त्र में इश्वरीय महिमा चमकती है जो आपके हृदय में परमेश्वर रूपी आकार के सांचे के साथ सटीक रीति से मेल

खाती है। इस प्रकार, यह बाइबल की सत्यता और मूल्य को प्रमाणित करती है।

हां, मेरा मानना है कि प्रत्येक मनुष्य के प्राण में परमेश्वर-रूपी आकार का सांचा है—जो कि परमेश्वर के विषय में एक अप्रत्यक्ष ज्ञान है। बाइबल सम्पूर्ण मानवता के विषय में बात करते हुए कहती है कि, “परमेश्वर से सम्बन्धित ज्ञान मनुष्यों पर प्रकट है, क्योंकि परमेश्वर ने इसे उन पर प्रकट किया है . . . यद्यपि वे परमेश्वर को जानते थे, फिर भी उन्होंने उसे न तो परमेश्वर के उपयुक्त सम्मान, और न ही धन्यवाद दिया” (रोमियों 1:19,21)।

बाइबल हमें यह शिक्षा देती है कि यह *ज्ञान* जो प्रत्येक प्राणी में पाया जाता है, उसके कारण हम सभी का उत्तरदायित्व है कि हम परमेश्वर की महिमा को प्रकृति में देखें। उसी प्रकार से हम पर उत्तरदायित्व है कि हम परमेश्वर की महिमा को यीशु में उसके वचन के माध्यम से देखें। “आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन कर रहा है” (भजन 19:1)। हम इसे देखने और धन्यवाद देने के लिए बाध्य हैं। इसी प्रकार से परमेश्वर का पुत्र भी परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करता है। और हमें इसे देखने और इसकी आराधना करने का उत्तरदायित्व मिला हैं। प्रेरित यूहन्ना कहता है, “हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी जैसी पिता के एकलौते की महिमा” (यूहन्ना 1:14)।

यह स्वतः प्रमाणित होने वाली महिमा है, जो परमेश्वर के वचन से प्रकाशित होती है तथा हमें एक परखी हुई, दृढ़ आधार वाली नींव प्रदान करती है, यह विश्वास दिलाने के लिए कि मसीही पवित्रशास्त्र, परमेश्वर की ओर से ही हैं।

तकनीकी ज्ञान बनाम स्वाद

पवित्रशास्त्र में जिस तरह हम परमेश्वर की महिमा को जानते हैं, यह ठीक उसी प्रकार है जैसे कि हम जानते हैं कि शहद आखिरकार शहद ही है। विज्ञान और

तकनीकी ज्ञान के द्वारा हम कह सकते हैं कि इस बर्तन में शहद है क्योंकि ऐसा हमने रासायनिक प्रयोगों के द्वारा पता लगाया है—ठीक उसी प्रकार बाइबल के विद्वान भी दृढ़ता से तर्क कर सकते हैं कि बाइबल ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय है। परन्तु अधिकांश लोग वैज्ञानिक या विद्वान नहीं हैं। हम जानते हैं कि यह शहद है क्योंकि हमने इसे चखा है।

ठीक इसी तरह, बाइबल के सन्देश में परमेश्वर की महिमा की एक ईश्वरिय मिठास है। यह हमारे भीतर उस हिस्से को छूती है जिसके विषय में हम जानते हैं कि उसे परमेश्वर द्वारा वहाँ रखा गया था। "तेरे वचन मुझ को कितने मीठे लगते हैं, हाँ मेरे मुंह में मधु से भी मीठे हैं!" (भजन 119:103)। "परख कर देखो कि यहोवा कैसा भला है!" (भजन 34:8)। यह है वास्तविक देखना और चखना। यह बनावटी विश्वास नहीं है। यह जो वास्तव में है उसी को देखता है और चखता है।

हमारी सांत्वना की चट्टान के लिए हाँ

इसलिए जब यीशु कहता है कि, "पवित्रशास्त्र का खण्डन नहीं किया जा सकता" (यूहन्ना 10:35), और जब प्रेरित पौलुस कहता है, "सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है" (2 तीमुथियुस 3:16), और जब प्रेरित पतरस कहता है, कि पवित्रशास्त्र के लेखक "पवित्र आत्मा की प्रेरणा के द्वारा परमेश्वर की ओर से बोलते थे" (2 पतरस 1:21), तो हमारा हृदय बोल उठता है, *जी हाँ।* हमने चखा है और देखा है। हमने जाना भी है। और यह ज्ञान दृढ़ नींव पर स्थापित है। हम अंधेरे में छलांग नहीं लगा रहे हैं।

हमारा सम्पूर्ण प्राण बाइबल की जय जयकार के साथ गूंजता है कि "तेरा सम्पूर्ण वचन सत्य ही है" (भजन 119:160)। "हे यहोवा, तेरा वचन, आकाश

में सदा तक स्थिर रहता है” (भजन 119:89)। “परमेश्वर का एक एक वचन ताया हुआ है” (नीतिवचन 30:5)।

जब ऐसा होता है, तो परमेश्वर का सम्पूर्ण सत्य हमें धोता है, यहां तक कि कोरोना वायरस के मध्य में भी। यह एक अतुलनीय सांत्वना प्रदान करता है कि: “जब मेरे मन में चिन्ताएं बढ़ जाती हैं, तब तेरी सांत्वना मेरे प्राण को प्रसन्न करती है” (भजन 94:19)। “यहोवा टूटे मन वालों के निकट रहता है, और पश्चात्तापी आत्मा का उद्धार करता है। धर्मी पर बहुत-सी विपत्तियां आती तो हैं, परन्तु यहोवा उसको उन सबसे छुड़ाता है” (भजन 34:18-19)।

कोई भी मनुष्य इस महामारी में हमारे प्राण को उस प्रकार सांत्वना नहीं दे सकता है जिस प्रकार से परमेश्वर देता है। उसकी सांत्वना अटल है जैसे कि एक तूफ़ानी समुद्र के बीच में एक महान, ऊँची चट्टान। यह सांत्वना केवल उसके वचन अर्थात बाइबल ही से आती है।

अध्याय 3

यह चट्टान धर्मी है

परमेश्वर हमारी **च**ट्टान तब ही हो सकता है, यदि वह धर्मी हो। एक अधर्मी **च**ट्टान केवल एक भ्रम है। कोई भी वैश्विक महामारी, परमेश्वर पर हमारे इस विश्वास को डगमगाती है कि वह धर्मी, पवित्र, और भला है। यदि परमेश्वर इस सब के मध्य में धर्मी नहीं है तो हमारे पास कोई **च**ट्टान नहीं है।

इसलिए हमें यह पूछना चाहिए, कि परमेश्वर की पवित्रता, धार्मिकता और भलाई क्या है? क्योंकि यदि हम नहीं जानते कि वे क्या हैं, तो हम यह कैसे जानेंगे कि इस कोरोना वायरस के प्रकोप ने उन्हें ध्वस्त नहीं कर दिया है? या फिर इसके विपरीत हम कैसे जानेंगे कि यही गुण उस **च**ट्टान की अनन्त नींव हैं जो हमें बचाते हैं?

हम यह देखते हैं कि बाइबल परमेश्वर की पवित्रता, धार्मिकता और भलाई को एक ही जैसा नहीं, किन्तु एक दूसरे से जुड़ा हुआ करके प्रस्तुत करती है। आइए हम परमेश्वर की पवित्रता से आरम्भ करें। अंततः क्या है यह?

परे और असीम मूल्य

पुराने नियम में पवित्रता शब्द का मूल अर्थ अलग होने के विचार से सम्बन्धित है—सामान्य से पृथक और भिन्न। और जब इसका उपयोग परमेश्वर के लिए

किया जाता है, तो उसका अलग होना दर्शाता है कि वह एक अलग ही श्रेणी में अकेले ही है। वह एक अत्यन्त बहुमूल्य तथा अनोखे हीरे के जैसा है। हम इस तरह के ईश्वरीय भिन्नता के लिए *परे* शब्द का उपयोग कर सकते हैं। वह इतने अनोखे रूप से अलग है कि अन्य सभी वास्तविकताओं से परे है। वह इनके ऊपर है और इन सभी की तुलना में अधिक मूल्यवान है।

जब मूसा ने परमेश्वर के निर्देशों के विपरीत चट्टान से बोलने के स्थान पर उस पर प्रहार किया, तो परमेश्वर ने उसे फटकारा कि, "तुमने मुझ पर विश्वास नहीं किया और मुझे इस्राएलियों की दृष्टि में *पवित्र नहीं ठहराया"* (गिनती 20:12)। दूसरे शब्दों में, मूसा ने परमेश्वर को असाधारण और सर्वोच्च रूप से विश्वासयोग्य नहीं माना, बल्कि उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जैसे की वह कोई अन्य मानव अधिकारियों के नाई है जिसको कि अनदेखा किया जा सके।

या यशायाह 8:12–13 में, परमेश्वर ने यशायाह से कहा, "जिस-जिस बात से ये लोग डरते हैं उससे तू न तो डरना और न भय खाना। तू सेनाओं के यहोवा *को ही पवित्र मानना।* वही तेरे भय का कारण हो और तू उसी का भय मानना।" दूसरे शब्दों में, आप परमेश्वर को उन बातों की श्रेणी में न रखें जिनसे आप सामान्य तौर पर डरते हैं तथा भय खाते हैं। उससे यह जानकर व्यवहार करें कि वह पूर्णतः पृथक तथा अनोखा है—कि वह हमसे परे है—अतः उससे डरें और उसका भय खाएं।

इस कारण, परमेश्वर का असीम रीति से परे होना तथा उसका सर्वोच्च मूल्य ही उसकी पवित्रता है। वह अपने आप में ही एक भिन्न श्रेणी है। इसका अर्थ यह है कि वह अपने अस्तित्व के लिए किसी और वस्तु पर निर्भर नहीं है। वह स्वतः अस्तित्व में है। इसलिए उसे किसी भी वस्तु की आवश्यकता नहीं और न ही वह किसी पर निर्भर है। वह पूर्ण है तथा वह सिद्ध है। इसलिए,

वह सभी वास्तविकता तथा सभी मूल्य के स्रोत के रूप में सबसे अधिक मूल्य रखता है।

सब के ऊपर परन्तु अकेला नहीं

परमेश्वर अन्य सभी वास्तविकताओं से अत्यन्त ऊँचा है किन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि वह प्रेम रहित है तथा एकांतवास की अवस्था में है। त्रिएकता का ऐतिहासिक सिद्धांत सम्पूर्णतः से बाइबल पर अधारित है। परमेश्वर का अस्तित्व तीन ईश्वरीय व्यक्तियों में है। किन्तु ये तीनों एक ही हैं—एक ईश्वरीय तत्व। एक ही परमेश्वर है। तीन परमेश्वर नहीं। परन्तु यह जो एक परमेश्वर है वह पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के रहस्मयी एवं वास्तविक एकता में सह-अस्तित्व में है—यह तीनों अनन्त काल से बिना किसी आरम्भ के हैं। इनमें से प्रत्येक वास्तव में परमेश्वर हैं।

तो पवित्रता—परमेश्वर की महानता और उसका अपार मूल्य—का अर्थ यह नहीं है कि वह अपनी असीम ऊँचाईयों में प्रेम रहित और एकांतवास में है। परमेश्वर पिता सिद्धता, पूर्णता, और असीमित रीति से पुत्र को जानता है और उस से प्रेम करता है (मरकुस 1:11; 9:7; कलुसियों 1:13)। परमेश्वर पुत्र, पिता को सिद्धता, पूर्णता और असीमित रीति से जानता है और उस से प्रेम करता है (यूहन्ना 14:31)। पिता और पुत्र के आपसी ज्ञान और प्रेम की सिद्ध, पूर्ण और असीमित अभिव्यक्ति पवित्र आत्मा है।

यह क्यों मायने रखता है? क्योंकि यह सिद्ध त्रिएक संगति परमेश्वर की भरपूरी, सिद्धता और पूर्णता के लिए आवश्यक है। यह उसके अपार मूल्य, उसकी सुंदरता और उसकी महानता के लिए आवश्यक है—अर्थात, यह उसकी पवित्रता के लिए अनिवार्य है।

पवित्रता धार्मिकता के साथ जुड़ी हुई है

अभी जो परमेश्वर की पवित्रता का वर्णन किया गया है उसमें एक पहलू अनुपस्थित है। बाइबल परमेश्वर की पवित्रता के विषय में बात, मात्र उसके परे होने के संदर्भ में ही नहीं, वरन् नैतिकता के संदर्भ में भी करती है। पवित्र होने का अर्थ न केवल अलग होना और परे होना है, वरन् धर्मी होना भी है।

यह बात हमारे समक्ष एक ऐसे प्रश्न को उत्पन्न करती है, जो इस बात पर अत्यधिक प्रभाव डालेगा कि हम परमेश्वर के सम्बंध में कोरोना वायरस को किस प्रकार से देखते हैं: क्योंकि धार्मिकता का तात्पर्य है कि वही कार्य करना जो उचित है। और उचित कार्य करने का अर्थ है कि उचित के मापदण्ड के अनुरूप होना। किन्तु प्रश्न यह है कि परमेश्वर की धार्मिकता किस मापदण्ड के अनुरूप है?

सृष्टि से पूर्व, परमेश्वर के सिवाए कोई भी मापदण्ड नहीं था। उसके पास अनुपालन करने के लिए उसके बाहर और कुछ भी नहीं था। सृष्टि से पूर्व, परमेश्वर ही एकमात्र वास्तविकता था। तो जब परमेश्वर ही एकमात्र वास्तविकता है, तब आप कैसे निर्धारित करेंगे कि परमेश्वर के लिए क्या उचित है? अर्थात, यह कैसे सम्भव है कि परमेश्वर की पवित्रता में केवल उसके सबसे परे होने के गुण को धारण करें और उसकी धार्मिकता को नकार दें?

इसका उत्तर यह है कि परमेश्वर की धार्मिकता का मापदण्ड स्वयं परमेश्वर ही है। बाइबल का आधारभूत सिद्धांत यह है कि: “वह स्वयं अपना इनकार नहीं कर सकता” (2 तीमुथियुस 2:13)। वह ऐसे कार्य नहीं कर सकता है जिनसे उसके स्वयं के अनन्त मूल्य, सुंदरता और महानता को नकारा जा सके। यही वह मानक है जो परमेश्वर के लिए उचित है।

इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की पवित्रता—अर्थात् धार्मिकता—का नैतिक पहलू यह है कि वह अपने मूल्य, सुंदरता और महानता के अनुरूप कार्य

करने के लिए प्रतिबद्ध है। उसका प्रत्येक स्नेह, प्रत्येक विचार, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक कार्य सदैव उसके परे होने के गुण की परिपूर्णता के असीमित मूल्य और संुदरता के तुल्य होगा। यदि परमेश्वर इस मूल्य या संुदरता या महानता को नकारे तो यह उचित नहीं होगा। जो परम मापदण्ड है वह टूट जाएगा। और वह अधर्मी ठहरेगा।

धार्मिकता भलाई के साथ जुड़ी हुई है

परमेश्वर की भलाई उसकी पवित्रता या उसकी धार्मिकता के समरूप नहीं है। परन्तु यह एक साथ जुड़ी हुई है क्योंकि उसकी पवित्रता उसकी भलाई में उमड़ती है, और उसकी धार्मिकता उसको दिशा प्रदान करती है। ये कभी भी एक-दूसरे का विरोध नहीं करती हैं।

परमेश्वर की भलाई है कि वह स्वभाव से उदार है—अर्थात वह मनुष्यों को आशीषित करता है। सब कुछ को परिपूर्ण करने वाला परमेश्वर जो कि परे और सिद्ध—अथार्त पवित्र है—वह एक उमड़ते हुए झरने की नाई है। यही कारण है कि वह स्वभाव ही से उदार है। परमेश्वर को कोई आवश्यकता नहीं है। इसीलिए वह स्वयं में किसी कमी को पूर्ण करने के लिए कभी भी दूसरों का शोषण नहीं करता है। इसके विपरीत, उसके स्वभाव में ही प्रदान करना निहित है न कि प्राप्त करना। "न ही मनुष्यों के हाथों से उसकी सेवा-टहल होती है, मानो कि उसे किसी बात की आवश्यकता हो, क्योंकि वह स्वयं सब को जीवन, श्वास और सब कुछ प्रदान करता है" (प्रेरितों के काम 17:25)।

परन्तु उसकी भलाई उसकी धार्मिकता से पृथक नहीं है। इसको इस प्रकार प्रदान नहीं किया जाता है जिससे कि उसके अनन्त मूल्य, उसकी संुदरता और उसकी महानता को नकारा जाए। यही कारण है कि परमेश्वर की धार्मिकता में अंतिम दण्ड के साथ-साथ भलाई भी सम्मलित है। जब परमेश्वर नरक में

पश्चाताप न करने वालों को दण्ड देता है, तो वह उन पर अपनी भलाई नहीं दिखा रहा होता है। परन्तु फिर भी वह भला होना नहीं छोड़ देता है। उसकी पवित्रता और धार्मिकता उसकी भलाई को नियंत्रित करती है।

यही कारण है कि उसकी भलाई विशेष रीति से उन लोगों पर उमड़ती है जो उसका भय मानते हैं और उसकी शरण लेते हैं। "तेरी भलाई कितनी महान् है, जो तू ने अपने *भय* मानने वालों के लिए संचित कर रखी है, और मनुष्यों के सामने उन पर की है जो तेरी *शरण में आते हैं"* (भजन 31:19)।

यह आदर और विश्वास परमेश्वर की भलाई नहीं *कमा* सकते हैं। सीमित तथा पूर्णतः निर्भर पापी मनुष्य परमेश्वर से कुछ भी नहीं कमा सकता है। पापियों के लिए परमेश्वर की भलाई सदा बिना मूल्य के मिलती है जिसके वे योग्य नहीं हैं। तो फिर क्यों, परमेश्वर उन लोगों पर अपनी असीम भलाई दिखाता है जो उसका भय मानते हैं और उसकी शरण लेते हैं? ऐसा इसलिए है क्योंकि ऐसा आदर और विश्वास परमेश्वर के मूल्य, उसकी सुंदरता और उसकी महानता को प्रदर्शित करता है (रोमियों 4:20)। और इस कारण, परमेश्वर की धार्मिकता उसे अपने को सम्मान देने वाले व्यवहार की पुष्टि करने के लिए प्रेरित करती है।

फिर, कोरोना वायरस के विषय में क्या कहें?

हम अगले अध्याय में परमेश्वर की सर्व-ज्ञानी तथा प्रत्येक वस्तु पर नियंत्रण करने वाली सार्वभौमिकता को देखेंगे। परन्तु जो हमने यहाँ देखा है वह हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचने से रोकेगा कि कोरोना वायरस में परमेश्वर का हाथ होना उसकी पवित्रता, धार्मिकता या भलाई पर प्रश्न चिन्ह उठाता है। हम ऐसे सरलमति नहीं होंगे कि मानवीय दुखों को परमेश्वर के अधर्म से जोड़ें। या फिर

यह निष्कर्ष निकालें कि परमेश्वर पवित्र अथवा भला नहीं रहता है जब वह संसार पर शासन करता है।

हम सब के सब पापी हैं और इसमें कोई अपवाद नहीं है। हम सभी ने परमेश्वर के मूल्य, उसकी सुंदरता और उसकी महानता की महिमा को, उन वस्तुओं से बदल दिया है जिनकी तुलना में हम इससे अधिक आनन्द उठाते हैं (रोमियों 1:23; 3:23)। और यह परमेश्वर के प्रति एक घिनौना अपमान है चाहे हमें इसका आभास हो या न हो। इस कारण हम दण्ड के लायक हैं। परमेश्वर की महिमा का अनादर करना हमें उसके पवित्र क्रोध के योग्य पात्र बनाता है। बाइबल कहती है कि हम "स्वभाव ही से क्रोध की सन्तान हैं" (इफिसियों 2:3)। इसका अर्थ यह है कि यदि परमेश्वर हम पर अपनी भलाई न दिखाए फिर भी वह पवित्र और धर्मी ठहरेगा।

इस कारण, कोरोना वायरस, परमेश्वर की अपवित्रता या अधार्मिकता या भलाई की कमी की ओर संकेत नहीं करता है। हमारी **च**ट्टान, इन संकट के दिनों में भी, अधर्मी नहीं है। वह अपवित्र नहीं है। "यहोवा के समान कोई पवित्र नहीं . . . ; हमारे परमेश्वर के समान कोई चट्टान नहीं है" (1 शमुएल 2:2)। हमारी **च**ट्टान एक छलावा नहीं है।

अध्याय 4

सब बातों पर सार्वभौमिक

अध्याय 2 में मैंने “कड़वे प्रावधान” शब्दों का उपयोग किया था। कोरोना वायरस एक ऐसा ही अनुभव है। परमेश्वर के कुछ कार्यों को कड़वा कहना ईशनिंदा नहीं है। रूत की सास नाओमी, जिसने अपने पति, अपने दो बेटों और एक बहू को अकाल और निर्वासन में खो दिया था, उस ने यह कहा:

> सर्वशक्तिमान् ने मुझ को बड़ा दुःख दिया है। मैं भरी पूरी गई थी, परन्तु यहोवा मुझे छूछी करके ले आया है। . . . सर्वशक्तिमान ने मुझे दुःख दिया है। (रूत 1:20-21)

वह झूठ नहीं बोल रही थी, न ही बढ़ा-चढ़ा के बोल रही थी, और न ही दोष लगा रही थी। यह एक सरल और कठोर तथ्य था। “कड़वा प्रावधान” कहने के द्वारा हम परमेश्वर के मार्गों को तिरस्कार नहीं रहे हैं। यह तो मात्र उसका विवरण है।

मैंने अध्याय 2 में यह भी कहा कि परमेश्वर के वचन की मिठास इस कड़वे प्रावधान के मध्य में कम नहीं हो जाती है—यदि हम इस रहस्य को सीख गए हैं कि हम, “शोकितों के सदृश परन्तु सदैव आनन्द मनाते हैं” (2 कुरिन्थियों 6:10)। मैंने तब कहा था कि हम पुनः इस रहस्य की ओर लौटेंगे। फिर मैंने

इस बात को एक वाक्य में सारांशित किया था: *वह सार्वभौमिकता जो कोरोना वायरस को रोक सकती है, परन्तु नहीं रोक रही है, यह वही सार्वभौमिकता है जो हमारे प्राण को इसके मध्य में भी संभाले रहती है।* यह ज्ञान सब बातों को बदल देता है। तो क्या यह सत्य है?

परमेश्वर जो चाहता है, वही करता है

इस अध्याय और अगले अध्याय में मेरा उद्देश्य यह दर्शाना है कि परमेश्वर सर्व-प्रभु है एवं सर्व-ज्ञानी है। वह कोरोना वायरस पर भी सार्वभौमिक है। मैं यह दर्शाना चाहता हूं कि यह एक अच्छा समाचार है—वास्तव में, यही रहस्य है परमेश्वर की मिठास को उसके द्वारा दिए गए कड़वे प्रावधानों में अनुभव करने का।

जब हम यह कहते हैं कि परमेश्वर सर्व-प्रभु है तो इसका अर्थ है कि वह सार्वभौमिक है। उसकी सार्वभौमिकता का अर्थ यह है कि वह *कर सकता* है, और वास्तव में *करता* भी है, वह सब, जो वह निर्णायक रूप से करने की इच्छा रखता है। मैं कह रहा हूँ *निर्णायक* रूप से क्योंकि परमेश्वर एक मायने में कुछ बातों की इच्छा तो रखता है जिन्हें वह नहीं करता है। वह ऐसी मनसाओं को व्यक्त कर सकता है जिन्हें वह कार्यवन्त न करने का स्वंय निर्णय करता है। इस मायने में, वे निर्णायक नहीं हैं। वह स्वयं ही इस प्रकार की इच्छाओं और मनसाओं को कार्यान्वित नहीं होने देता है।

उदाहरण के लिए, विलापगीत 3:32–33 पर विचार करें:

चाहे वह दुख भी दे
　　फिर भी अपनी अपार करुणा के अनुसार दया भी करेगा।
क्योंकि वह मनुष्यों को मन से न तो पीड़ा पहुँचाता,
　　और न दुख देता है।

वह हमें दु:ख *अवश्य* ही देता है, परन्तु *अपने हृदय से* नहीं। मुझे इसका अर्थ यह समझ में आता है कि जबकि उसके चरित्र (उसके हृदय) के कुछ एक पहलू हैं जो हमें दु:ख देने से कतराते हैं, फिर भी उसके चरित्र के अन्य पहलू हमें दु:ख दिये जाने की पवित्रता तथा धार्मिकता को निर्देशित करते हैं।

वह दो विचारों में नहीं बटा है। उसके सभी गुण एक दूसरे का सहयोग सिद्ध सुंदरता और सामंजस्य के साथ करते हैं। परन्तु ऐसा नहीं है कि उसमें जटिलता नहीं पायी जाती है। उसका चरित्र मानो एक अकेले गायक की प्रस्तुति के समान नहीं है, परन्तु वह संगीतकारों के एक समूह की प्रस्तुति के समान है।

इसलिए जब मैं कहता हूं कि उसकी सार्वभौमिकता का अर्थ है कि वह *कर* सकता है, और वास्तव में *करता* भी है, वह सब जो वह *निर्णायक* रूप से करने की इच्छा रखता है, तो मेरा तात्पर्य यह है कि उससे हटकर कोई भी ऐसी ताकत नहीं है जो उसकी इच्छा को विफल कर सके या बदल सके। जब वह *निर्णय* करता है कि कोई कार्य होना चाहिए, तो वह होता ही है। या दूसरे शब्दों में, सब कुछ इस ही कारण से होता है क्योंकि परमेश्वर ऐसा ही करने की इच्छा रखता है।

सर्व-व्यापक सार्वभौमिकता

यशायाह शिक्षा देता है कि सर्व-व्यापक सार्वभौमिकता परमेश्वरत्व का एक अभिन्न हिस्सा है:

> मैं ही परमेश्वर हूँ, अन्य कोई नहीं।
> मैं ही परमेश्वर हूँ, और मेरे तुल्य कोई नहीं है।
> मैं अन्त की बात आदि से

और जो बातें अब तक नहीं हुईं उन्हें प्राचीन काल से बताता आया हूँ।
मैं कहता हूं कि "मेरी योजना स्थिर रहेगी
और मैं अपनी भली इच्छा पूरी करूंगा।" (यशायाह 46:9-10)

परमेश्वर होने का अर्थ यह है कि वह अपनी सम्मति को सर्वदा स्थिर रखेगा। परमेश्वर सिर्फ *घोषित* ही नहीं करता है कि भविष्य में कौन सी घटनाएँ घटेगी; वरन वह उन्हें सम्भव भी करता है। वह अपने वचन बोलता है, और फिर वह कहता है, "मैं अपने वचन को *पूरा करने* के लिए उत्सुक हूँ।" (यिर्मयाह 1:12)।

अर्थात जैसे कि अय्यूब ने कठिन अनुभव के द्वारा यह सीखा कि, "मैं जानता हूँ कि तू सब कुछ कर सकता है, तथा तेरी कोई युक्ति विफल नहीं की जा सकती" (अय्यूब 42:2)। या फिर नबूकदनेस्सर ने प्रभु की करुणा से परिपूर्ण अपने अपमान से सीखा:

पृथ्वी पर रहने वाले उसके समक्ष कुछ भी नहीं हैं;
वह स्वर्ग की सेना और पृथ्वी के निवासियों के बीच
अपनी इच्छानुसार कार्य करता है,
और न तो कोई उसका हाथ ही रोक सकता
और न पूछ सकता है कि "तू ने यह क्या किया।" (दानिय्येल 4:35)

या फिर जैसा कि भजनकार कहता है:

जो कुछ यहोवा चाहता है, उसे वह
आकाश में और पृथ्वी पर,
समुद्र और समुद्र-तलों में करता है। (भजन 135:6)

या फिर जैसे निष्कर्ष पर प्रेरित पौलुस आया:

> [वह] अपनी इच्छा के अनुसार सभी काम करता है। (इफिसियों 1:11)

ध्यान दीजिए कि "सभी काम।" मात्र कुछ ही काम नहीं। और *"अपनी* इच्छा के अनुसार", उसके स्वयं से परे या उससे अलग किसी भी इच्छा या ताकत के अनुसार नहीं।

दूसरे शब्दों में, परमेश्वर की सार्वभौमिकता सर्व-व्यापी और सर्व-व्यापक है। वह इस संसार पर सम्पूर्ण अधिकार रखता है। वह आंधी (लूका 8:25), बिजली (अय्यूब 36:32), बर्फ (भजन 147:16), मेंढकों (निर्गमन 8:1-15), मच्छड़ों (निर्गमन 8:16–19), डांसों (निर्गमन 8:20-32), टिड्डियों (निर्गमन 10:1-20), बटेरों (16:6-8), कीड़ों (योना 4:7), मछली (योना 2:10), गौरैया (मत्ती 10:29), घास (भजन 147:8), पौधे (योना 4:6), अकाल (भजन 105:16), सूरज (यहोशु 10:12–13), जेल के दरवाज़े (प्रेरितों के कम 5:19), अंधापन (निर्गमन 4:11; लूका 18:42), बहरापन (निर्गमन 4:11; मरकुस 7:37), लकुवा (लूका 5:24-25), बुखार (मत्ती 8:15), हर प्रकार की बीमारी (मत्ती 4:23), यात्रा की योजना (याकुब 4:13-15), राजाओं के हृदय (नीतिवचन 21:1; दानियल 2:21), राष्ट्रों (भजन 33:10), हत्यारों (प्रेरितों के काम 4:27-28), और आत्मिक मृत्यु (इफिसियों 2:4-5)—को नियंत्रित करता है और ये सब उसकी सार्वभौमिक इच्छा को पूरी करते हैं।

परमेश्वर के विषय भावुक विचारों का समय नहीं

इस कारण, कोरोना वायरस परमेश्वर के द्वारा भेजा गया था। यह समय नहीं है कि हम परमेश्वर के विषय में भावुक विचार रखें। यह एक कड़वे अनुभव का समय है। परमेश्वर ने ही इसे निर्धारित किया है। वह इस पर प्रभुता करता है। वह इसे समाप्त भी करेगा। इसका कोई भी भाग उसके अधिकार के बाहर नहीं है। जीवन और मृत्यु उसके ही हाथ में हैं।

अय्यूब ने अपने होठों से पाप नहीं किया जब उसने यह कहा कि (अय्यूब 1:22):

> मैं अपनी मां के पेट से नंगा निकला और नंगा ही चला जाऊंगा; यहोवा ने दिया और *यहोवा ही ने लिया;* यहोवा का नाम धन्य है। (अय्यूब 1:21)

प्रभु ने दिया है। और प्रभु ने ले लिया। प्रभु ने अय्यूब की दस संतानों को भी ले लिया।

परमेश्वर के सम्मुख, किसी को भी जीवन का अधिकार नहीं है। प्रत्येक सांस जो हम लेते हैं वह उसके अनुग्रह का उपहार है। हम अपने हृदय की एक भी धड़कन के लायक नहीं है। जीवन और मृत्यु अन्ततः परमेश्वर के हाथों में हैं:

> इसलिये अब तुम देख लो कि मैं ही वह हूँ,
> और मेरे सिवाय कोई ईश्वर नहीं।
> मृत्यु और जीवन का देने वाला मैं ही हूँ।
> मैंने घायल किया, तथा मैं ही चंगा करता हूँ;
> कोई नहीं है जो मेरे हाथ से छुड़ा सके। (व्यवस्थाविवरण 32:39)

इसलिए, जब हम कोरोना वायरस—या किसी अन्य जानलेवा स्थिति के विषय में विचार करते हैं—तो याकूब हमें बताता है कि हमें कैसे सोचना और बोलना चाहिए:

> तुम्हें यह कहना चाहिए, “यदि प्रभु की इच्छा हो तो हम जीवित रहेंगे, और यह अथवा वह काम भी करेंगे।” (याकूब 4:15)

यदि उसने चाहा, तो हम जीवित रहेंगे। यदि नहीं, तो हम जीवित नहीं रह सकते।

मैं तो यह जानता हूँ कि यह भी सम्भव है कि मैं इस पुस्तक के प्रकाशन को देखने के लिए जीवित न रहूँ। मेरे तो एक रिश्तेदार भी हैं जो कोरोना वायरस से संक्रमित हैं। मैं चौहत्तर वर्ष का हूं, और मेरे फेफड़ों में रक्त का थक्का है और वे श्वास की बीमारी के कारण कमज़ोर हैं। परन्तु यह बातें अंततः कुछ भी तय नहीं करती हैं। परमेश्वर ही निर्णय करता है। क्या यह अच्छा समाचार है? हाँ। मैं अगले अध्याय में यही बात दिखाने का प्रयास करूँगा।

अध्याय 5

उसके प्रभुत्व की मधुरता

मैं क्यों कोरोना वायरस एवं अपने जीवन के ऊपर परमेश्वर की सार्वभौमिकता के सन्देश को एक मधुर शिक्षा के रूप में ग्रहण करूँ? मैंने कहा था कि रहस्य इस ज्ञान में है कि, *वह सार्वभौमिकता जो कोरोना वायरस को रोक सकती है, परन्तु नहीं रोक रही है, यह वही सार्वभौमिकता है जो हमारे प्राण को इसके मध्य में भी संभाले रहती है।* दूसरे शब्दों में, यदि हम दुख पर से परमेश्वर की सार्वभौमिकता को हटाने का प्रयास करते हैं, तो हम उसकी सार्वभौमिकता को हर बात के द्वारा भलाई उत्पन्न करने से भी रोक देते हैं।

परमेश्वर को सिंहासन से हटाना अच्छा सन्देश नहीं है

वह सार्वभौमिकता जो बीमारी पर प्रभुता रखती है, वही हानि के समय भी हमे सम्भालती है। वह सार्वभौमिकता जो प्राण लेती है, यह वही सार्वभौमिकता है जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की है और विश्वासियों को उनके घर अर्थात् स्वर्ग और मसीह के पास लाती है। यह विचार मधुर नहीं है कि शैतान, बीमारी, हानि, भाग्य या परिस्थितियाँ अन्ततः मेरे जीवन पर नियंत्रण रखते हैं। यह अच्छा सन्देश *नहीं* है।

एक अच्छा सन्देश यह है कि परमेश्वर राज्य करता है। क्यों? क्योंकि परमेश्वर पवित्र, धर्मी और भला है। और उसकी बुद्धि असीम है। “परमेश्वर में बुद्धि और बल हैं; सम्मति और समझ उसी में हैं” (अय्यूब 12:13)। “उसका ज्ञान असीम है” (भजन 147:5)। “अहा! परमेश्वर का धन, बुद्धि और ज्ञान कितने अगाध है!” (रोमियों 11:33)। उसका महान उद्देश्य है कि “परमेश्वर का विभिन्न प्रकार का ज्ञान, उन प्रधानों और अधिकारियों पर, जो आकाश में हैं प्रकट किया जाए” (इफिसियों 3:10)।

कोई भी बात उसे आश्चर्यचकित, या भ्रमित, या चिंतित नहीं करती है। उसकी असीम सामर्थ्य, उसकी असीम पवित्रता, धार्मिकता और भलाई तथा ज्ञान के द्वारा सुरक्षित है। और यह सब उन लोगों के लिए उपलब्ध है जो उसके पुत्र यीशु मसीह पर भरोसा करते हैं। जो भी कार्य परमेश्वर ने यीशु को पापियों के लिए मरने के लिए भेजने के द्वारा किया है, उसका सम्पूर्ण रीति से कोरोना वायरस से लेना देना है।

कैसे परमेश्वर ने पापियों के लिए “सब कुछ” सुरक्षित किया

इस बात को ऐसे समझिए। रोमियों 8:32 में यह लिखा है: “वह जिसने अपने पुत्र को भी नहीं छोड़ा परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया, तो वह उसके साथ हमें सब कुछ उदारता से क्यों न देगा?” इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर की यह स्वेच्छा थी कि वह अपने पुत्र को हमारे बदले क्रूस पर भेजे, इस बात की घोषणा तथा पुष्टि है कि वह अपनी सम्पूर्ण सार्वभौमिकता का उपयोग करेगा “हमें सब कुछ उदारता से देने के लिए।” “तो वह उसके साथ ही हमें सब *कुछ* उदारता से क्यों न देगा?” इसका अर्थ यह है: कि वह सबको निश्चित रूप से सब कुछ देगा। इस बात का आश्वासन उसके पुत्र के लहू से मिलता है।

और ये "सब कुछ" क्या हैं? ये वे वस्तुऐं हैं जिनकी हमें आवश्यकता है उसकी इच्छा पूरी करने के लिए, उसके नाम की महिमा करने के लिए और अन्ततः उसकी आनन्द पूर्ण उपस्थिति में सुरक्षित पहुँचने के लिए।

तीन पदों के बाद, पौलुस समझाता है कि यह बात वास्तविक जीवन में किस प्रकार कार्य करती है—यहाँ तक कोरोना वायरस की स्थिति में भी। कैसा प्रतीत होगा जब परमेश्वर का यह असीम, लहू-द्वारा-प्रमाणित समर्पण कि वह हमें "सब कुछ" प्रदान करेगा, कोरोना वायरस का सामना करेगा? पौलुस यहाँ यह कहता है:

> कौन हमको मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या सताव, या अकाल, या नंगापन, या जोखिम, या तलवार [या कोरोना वायरस]? जैसा लिखा है,
>
> "तेरे लिए हम दिन भर घात किए जाते हैं;
> हम वध होने वाली भेड़ों के सदृश समझे जाते हैं।"
>
> परन्तु इन सब बातों में हम उसके द्वारा जिसने हम से प्रेम किया जयवन्त से भी बढ़कर हैं। (रोमियों 8:35–37)

इन कष्टपूर्ण और आश्चर्यजनक शब्दों को भूल न जाएं: "हम दिन भर घात किए जाते हैं।" इसका अर्थ यह है कि "सब कुछ" परमेश्वर ही हमें देगा, क्योंकि उसने अपने पुत्र को भी नहीं रख छोड़ा और इस "सब कुछ" में मृत्यु से भी होकर सुरक्षित पहुँचना शामिल है। या जैसा कि वह रोमियों 8:38-39 में कहता है, "क्योंकि मुझे पूर्ण निश्चय है कि न मृत्यु, न जीवन . . . हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।"

शैतान तो बुरा चाहता है

यदि परमेश्वर द्वारा मिली हुई छूट के कारण शैतान का हमारे दुःख और मृत्यु में कोई हाथ हो भी, तौभी अंतिम निर्णय उसका नहीं है। वह परमेश्वर की अनुमति के बिना और उसके द्वारा निर्धारित सीमा से बढ़ कर हमें चोट नहीं पहुँचा सकता है (अय्यूब 1:12; लूका 22:31; 2 कुरिन्थियों 12:7)। और अंत में, हमें शैतान से यह कहना उचित होगा जैसा कि युसूफ ने अपने भाइयों से कहा जिन्होंने उसे दासत्व में बेच दिया था: “तुमने तो मेरे साथ बुराई करने की ठानी थी; परन्तु परमेश्वर ने उसी को भलाई के लिए ले लिया” (उत्पत्ति 50:20)।

इस शिक्षा में फेर बदल करने से सावधान रहें। वह यहाँ यह नहीं कह रहा है कि, “परमेश्वर ने उस को भलाई के लिए *उपयोग* किया है” या “परमेश्वर ने उसी को भलाई में *बदल* दिया है।” वह कहता है, “परमेश्वर ने उसी को भलाई के लिए ले लिया।” उनका उद्देश्य दुष्टतापूर्ण था। परमेश्वर का एक भला उद्देश्य था। परमेश्वर ने इस पाप पूर्ण कार्य को बीच में ठीक करना आरम्भ नहीं किया था। आरम्भ ही से उसके पास एक उद्देश्य एवं अर्थ था। प्रारम्भ से ही उसने भलाई ठानी थी।

यह बात हमें तब सांत्वना देती है जब मनुष्यों की बुराई और शैतान की बुराई हमारे दुख को अत्यंत बढ़ाती हैं। मसीह में होने के नाते, हमें शैतान (या बुरे मनुष्यों) से यह कहने का पूरा अधिकार है कि, “तुमने तो मेरी बुराई करने की ठानी; परन्तु परमेश्वर ने उसी को भलाई के लिए ले लिया।” न तो शैतान, न ही बीमारी और न ही पापी मनुष्य सार्वभौमिक है। केवल परमेश्वर ही सार्वभौमिक है। और वह भला है—तथा बुद्धिमान और सार्वभौमिक है।

केवल गौरैया नहीं, किन्तु हर एक बाल

अपने शिष्यों के लिए परमेश्वर की सार्वभौमिकता की मधुरता को यीशु ने बड़ी ही सुन्दर रीति से कुछ इस प्रकार व्यक्त किया:

> क्या एक पैसे में दो गौरैएं नहीं बिकतीं? फिर भी तुम्हारे पिता की इच्छा के बिना उनमें से एक भी भूमि पर नहीं गिर सकती। तुम्हारे सिर के बाल तक भी गिने हुए है। इसलिए डरो मत। तुम बहुत-सी गौरैयों से भी कहीं अधिक मूल्यवान हो। (मत्ती 10:29–31)

परमेश्वर की इच्छा के बिना एक भी गौरैया भूमि पर नहीं गिर सकती। परमेश्वर की योजना के बिना एक भी वायरस नहीं हिल सकता है। यह है छोटी-छोटी बात पर भी परमेश्वर की सार्वभौमिकता। और इसके बाद यीशु आगे क्या कहता है? तीन बातें: तुम बहुत-सी गौरैयों से भी कहीं अधिक मूल्यवान हो। तुम्हारे सिर के सारे बाल गिने हुए हैं। डरो मत।

क्यों न डरें? क्योंकि छोटी से छोटी बात पर भी परमेश्वर की सार्वभौमिकता—चाहे हम जीवित रहें या मर जाएं—उसकी पवित्रता, धार्मिकता, भलाई और ज्ञान के साथ कायर्वन्त होती है। मसीह में होने के कारण हम आसानी से व्यय कर दिये जाने वाले प्यादे नही हैं। हम तो उसकी बहुमूल्य संतान हैं। "तुम बहुत-सी गौरैयों से भी कहीं अधिक मूल्यवान हो।"

यह वही रहस्य है जिसका मैंने पहले उल्लेख किया था: *यह ज्ञान कि वह सार्वभौमिकता जो कोरोना वायरस को रोक सकती है, परन्तु नहीं रोक रही है, यह वही सार्वभौमिकता है जो हमारे प्राण को इसके मध्य में भी सम्भाले रहती है।* और न केवल सम्भालती है, बल्कि इस बात को भी निश्चित करती है कि सब कुछ, चाहे वह कड़वा हो या मधुर, एक साथ मिलकर हमारे लिए भलाई

को उत्पन्न करती है—उन लोगों के लिए जो परमेश्वर से प्रेम करते हैं और जिन्हें मसीह में बुलाया गया है (रोमियों 8:28–30)।

मेरा कार्य पूर्ण होने तक अविनाशी

इस प्रकार का चट्टान-जैसा-दृढ़ विश्वास ही है जिसने दो हज़ार वर्षों से मसीहियों को मृत्यु का सामना करते समय साहस प्रदान किया है। परमेश्वर की बुद्धिमान और भली सार्वभौमिकता का सत्य ही है जिसने हज़ारों मसीहियों को प्रेम पूर्ण बलिदान की स्थिति में एक दृढ़ करने वाली सामर्थ का कार्य किया है।

उदाहरण के लिए, हेनरी मार्टिन, जो भारत और फारस में *मिशनरी*†

बन कर आये थे, जब वह मात्र इकतीस वर्ष के थे (16 अक्टूबर, 1812) तब एक महामारी (कोरोना वायरस की तरह) से मारे गए। उन्होंने जनवरी 1812 में अपनी *डायरी* में लिखा:

> यह प्रतीत हो रहा है कि, वर्तमान वर्ष किसी भी अन्य वर्ष से अधिक जोखिम भरा होगा; लेकिन यदि मैं फारसी भाषा में नए नियम का अनुवाद पूरा कर लेने तक जीवित रहूँगा, तो उसके बाद मेरे जीवन का अधिक महत्व नहीं होगा। परन्तु चाहे मैं जीवित रहूँ या मेरी मृत्यु हो जाए, मेरे द्वारा मसीह की महिमा हो! जब तक परमेश्वर के पास मेरे लिए कुछ भी कार्य है, तब तक मैं मर नहीं सकता।[2]

इस बात को इस प्रकार से भी कहा जाता है कि "मैं तब तक अविनाशी हूँ जब तक मसीह के लिए मुझे जो कार्य करना है वह पूरा नहीं हो जाता।" यह एक महान सत्य है। और यह इस वास्तविकता पर आधारित है कि जीवन और

† मिशनरी वह व्यक्ति है जो किसी नए स्थान पर सुसमाचार प्रचार की सेवा के लिए जाये।

मृत्यु सम्पूर्णता से हमारे सार्वभौमिक परमेश्वर के हाथों में है। वास्तव में, मसीह का सम्पूर्ण उद्देश्य उसके हाथ में है। अपनी मृत्यु से सात वर्ष पहले, चौबीस वर्ष की उम्र में, मार्टिन ने लिखा था:

> यदि परमेश्वर इस ब्रह्मांड पर सार्वभौमिक नहीं होता, तो मेरी स्थिति कितनी दयनीय होती! परन्तु प्रभु राज्य करता है, और पृथ्वी को इस बात से अनंदित होना चाहिए। तथा मसीह का उद्देश्य प्रबल होगा। हे मेरे प्राण, इस आशा में आनन्दित रह।[3]

भाग 2

परमेश्वर कोरोना वायरस के द्वारा क्या कर रहा है?

प्रारम्भिक विचार:
देखना और संकेत करना

यदि परमेश्वर को सिंहासन से हटाया नहीं गया है और वह वास्तव में, सब बातों पर "अपनी इच्छा की सुमति के अनुसार" प्रभुता करता है (इफिसियों 1:11), और यदि यह विनाशकारी कोरोना वायरस की महामारी भी उसके पवित्र, धर्मी, भले, और बुद्धि से परिपूर्ण हाथों में है, तो आखिर वह कर क्या रहा है? उसके उद्देश्य क्या हैं?

मनुष्य को महत्व देना छोड़ दें

इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करने से पहले, यह बात समझना आवश्यक है कि, परमेश्वर की बुद्धि की तुलना में, मेरी सोच का कोई महत्व नहीं है। आपकी सोच का भी कोई महत्व नहीं है। अपने मस्तिष्क में हम जो भी विचार करते हैं उसका बहुत ही कम महत्व है। बाइबल कहती है कि "जो अपने ऊपर भरोसा रखता है वह मूर्ख है" (नीतिवचन 28:26)। इसके विपरीत, हमें कहा गया है कि, "तू सम्पूर्ण हृदय से यहोवा पर भरोसा रखना, और अपनी समझ का सहारा न लेना" (नीतिवचन 3:5)।

हम मनुष्य सीमित और पापी हैं, समाजिक संस्कारों द्वारा ढाले गए हैं, तथा अपने वंशाणु और व्यक्तिगत इतिहास से प्रभावित हैं। हमारे हृदय, मस्तिष्क और मुख से अपने ही पक्ष को सही ठहराने के लिए हर प्रकार से तर्क निकलते हैं। इसलिए यशायाह नबी की इस बात पर ध्यान देना बुद्धिमानी की बात होगी, "अतः मनुष्य से जिसकी श्वास उसके नथनों में है, दूर ही रहो क्योंकि उसका मूल्य है ही क्या?" (यशायाह 2:22)।

क्या मेरे लिए यह पुस्तक लिखना, घमंड से भरा हुआ एक अनुमान लगाना नहीं होगा? विशेष तौर पर इस विषय पर लिखना कि "परमेश्वर कोरोना वायरस के द्वारा क्या कर रहा है?"

नहीं, यह घमंड से भरा अनुमान लगाना नहीं है। यह ऐसा नहीं है क्योंकि परमेश्वर ने मसीही पवित्रशास्त्रों में बातें की हैं। यह ऐसा नहीं है क्योंकि परमेश्वर ने मनुष्यों के निकट आकर उनकी भाषा में बातचीत की है ताकि हम उसे और उसके कार्यों को और सच्चाई को (यद्यपि आंशिक रूप से) जान सकें। यह घमंड से भरा हुआ अनुमान लगाना नहीं है यदि पौलुस के शब्द सत्य हैं: "अपने अनुग्रह को [परमेश्वर] ने समस्त ज्ञान और समझ से हमें बहुतायत से दिया है। उसने हमें अपनी इच्छा का रहस्य अपने भले अभिप्राय के अनुसार बताया" (इफिसियों 1:8–9)। यह घमण्ड से भरा अनुमान लगाना नहीं है, जैसा कि पौलुस कहता है, *"जिसे पढ़कर* तुम जान सकते हो कि मैं मसीह के रहस्य को कहां तक समझता हूँ" (इफिसियों 3:4)।

परमेश्वर इस संसार में अपने कार्यों के विषय में शान्त नहीं है। उसने हमें पवित्रशास्त्र दिया है। मैंने अध्याय 2 में कुछ कारण दिए थे कि क्यों हम बाइबल पर परमेश्वर के वचन के रूप में भरोसा कर सकते हैं। तो मेरा लक्ष्य परमेश्वर के कार्यों के विषय में अनुमान लगाना नहीं है। वरन् मेरा उद्देश्य है

पवित्रशास्त्र में उसके वचन को सुनना और जो मैंने सुना है उन बातों को आपके सामने प्रस्तुत करना।

उसके मार्ग कितने अगम्य हैं

इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले कि परमेश्वर क्या कर रहा है? मैं एक और बात कहना चाहता हूं कि परमेश्वर सदा ही ऐसे अनगिनत कार्य कर रहा होता है जिन्हें हम नहीं जानते हैं:

> हे यहोवा मेरे परमेश्वर,
> जो आश्चर्यकर्म और जो विचार तू ने हमारे लिए किए हैं,
> वे तो बहुत हैं: तेरे तुल्य कोई नहीं।
> यदि मैं खोल कर उनकी चर्चा करूँ
> तो वे इतने हैं कि उनकी गिनती नहीं हो सकती। (भजन 40:5)

कोरोना वायरस में परमेश्वर की युक्तियां न केवल गिनती से परे हैं, वह कई मायनों में अगम्य हैं। "अहा! परमेश्वर का धन, बुद्धि और ज्ञान कितने अगाध हैं! उसके विचार कैसे अथाह, और उसके मार्ग कैसे अगम्य हैं!" (रोमियों 11:33)। लेकिन जब पौलुस ने वह लिखा, तो वह यह नहीं कह रहा था, "तो इसलिए अपनी बाइबल बंद करो और अपनी वास्तविकता को स्वयं बनाओ।"

इसके विपरीत, पौलुस ने परमेश्वर के अगम्य मार्गों के बारे में इन शब्दों को संसार के सबसे उत्तम समाचार से भरे ग्यारह अध्यायों के चरम शिखर पर लिखा था, और यह इसलिए लिखे गए थे कि वे समझे जाएँ। उदाहरण के लिए, जब पौलुस दुख उठाने की निश्चयता की बात करता है, तो वह कहता है:

> हम अपने क्लेशों में भी आनन्दित होते हैं, क्योंकि *यह जानते हैं* कि क्लेश में धैर्य उत्पन्न होता है, तथा धैर्य से खरा चरित्र, और खरे चरित्र से आशा उत्पन्न होती है; आशा से लज्जा नहीं होती, क्योंकि पवित्र आत्मा जो हमें दिया गया है, उसके द्वारा परमेश्वर का प्रेम हमारे हृदयों में उण्डेला गया है। (रोमियों 5:3-5)

"यह जानते हैं!" पवित्रशास्त्र इसलिए लिखे गये हैं ताकि हम उन बातों को *जान* सकें जिन्हें परमेश्वर ने प्रकट किया है। विशेष कर क्लेश के विषय में—यहाँ तक कोरोना वायरस के बारे में भी। *अगम्य* का अर्थ है कि परमेश्वर हमेशा हमारे देख पाने की क्षमता से अधिक कार्य कर रहा है—और जिन कार्यों को हम देख रहे हैं, उनको भी नहीं देख पाते अगर उसने हम पर उन्हें प्रकट नहीं किया होता।

वास्तविकता की ओर संकेत करना

तो यहां पर मेरा कार्य *जॉन लेनन* के प्रसिद्ध गीत के समान कल्पना करना नहीं है।[4] वह हमसे कहता है कि कल्पना करो कि न तो स्वर्ग है, न ही नरक, लेकिन केवल आकाश ही है। फिर वह कहता है कि इस तरह की कल्पना करना तो सरल है। केवल प्रयास करो। यह सरल *है*। अत्यधिक सरल। लेकिन कोरोना वायरस मांग करता है कि हम कठिन वास्तविकता पर ध्यान दें, न कि सरल कल्पनाओं पर। परमेश्वर और उसका वचन वह वास्तविकता है जिसकी हमें आवश्यकता है—अर्थात् हमारे पैरों तले चट्टान। तो यहां मेरा उद्देश्य वास्तविकता की ओर संकेत करना है, न कि वास्तविकता का निर्माण करना। मेरा उद्देश्य कल्पना करने के स्थान पर, उन बातों को सुनना और उनकी पुष्टि करना जिनको परमेश्वर बोल चुका है।

मैं बाइबल की शिक्षा की ओर संकेत करूँगा और फिर कोरोना वायरस से उसका सम्बन्ध दिखाऊँगा। आपका कार्य है सही-गलत को परखना।

मैं यह इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि यीशु ने भी "वर्तमान युग की व्याख्या" करने के विषय में यही कहा था। वह इस बात से क्रोधित था कि लोग मौसम की स्थिति को समझने के लिए अपने तर्क करने की क्षमता का उपयोग कर सकते हैं, लेकिन इतिहास में परमेश्वर के कार्यों को समझने के लिए नहीं:

> हे पाखण्डियों, तुम धरती और आकाश के स्वरूप की व्याख्या करना जानते हो, परन्तु इस वर्तमान युग की व्याख्या क्यों नहीं करते? और तुम स्वयं वह निर्णय क्यों नहीं करते कि उचित क्या है?
> (लूका 12:56-57)

तो मेरी आशा यह है कि आप परमेश्वर से सहायता माँगेंगे, परमेश्वर के वचन को देखेंगे, और अपने लिए तय करेंगे कि सही क्या है। मुझे आशा है कि आप मेरी बातों को पवित्रशास्त्र के आधार पर परखेंगे (1 यूहन्ना 4:1) और उन बातों को थामेंगे जो भली हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:21)।

छः पथ पालन करने के लिए

इस प्रश्न के प्रतिउत्तर में मैंने छः कारण लिखे हैं कि परमेश्वर कोरोना वायरस के द्वारा क्या कर रहा है? इन सब उत्तरों के लिए कई पृष्ठ लिखे जा सकते हैं। लेकिन इस घड़ी को ध्यान में रखते हुए, मैं उसके लिए समय नहीं लूँगा। मैं केवल बाइबल के सत्य के पथों की ओर संकेत करूँगा, और मुझे आशा है कि आप इस पुस्तक को बंद करने के बाद उन पथों पर चलते रहेंगे। काश हम

एक साथ उन पथों पर बहुत दूर चल पाते। लेकिन मैं यह आपके हाथ में छोड़ता हूँ। आशा है कि परमेश्वर आपका मार्गदर्शन करेगा।

तो परमेश्वर कोरोना वायरस के द्वारा क्या कर रहा है?

अध्याय 6

नैतिक भयानकता का दृश्य

उत्तर 1

हर आपदा की तरह,
परमेश्वर कोरोना वायरस के द्वारा संसार को,
परमेश्वर को तुच्छ जानने वाले पाप की नैतिक भयानकता
और आत्मिक भद्देपन का प्रत्यक्ष चित्र दे रहा है।

पाप के कारण ही, वास्तव में, प्रत्येक शारीरिक कष्ट अस्तित्व में है। बाइबल का तीसरा अध्याय संसार में पाप के प्रवेश का वर्णन करता है। यह दिखाता है कि पाप ही वैश्विक विनाश और कष्ट का स्रोत है (उत्पत्ति 3:1-19)। पौलुस ने इस बात को रोमियों 5:12 में सारांशित किया: "अतः जिस प्रकार एक मनुष्य के द्वारा पाप ने जगत में प्रवेश किया, तथा पाप के द्वारा मृत्यु आई, उसी प्रकार मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।"

उस समय से संसार टूटा हुआ है। इसकी सारी सुंदरता भी बुराई, आपदाओं, बीमारियों और हताशा से ओत-प्रोत है। परमेश्वर ने इसे सिद्ध बनाया था। "तब परमेश्वर ने सब कुछ जो उसने बनाया था देखा। और देखो, वह

बहुत अच्छा था" (उत्पत्ति 1:31)। लेकिन मनुष्य के पाप में पतन होने से लेकर आज तक, इतिहास, उसकी सभी अद्भुत बातों के होते हुए भी, लाशों से भरा हुआ है।

पतन ही न्याय है

बाइबल इस टूटेपन को केवल स्वाभाविक तौर से नहीं, परन्तु पाप से भरे हुए संसार पर परमेश्वर के न्याय के रूप में देखती है। पाप के कारण संसार पर परमेश्वर के न्याय के प्रभावों का पौलुस इस प्रकार से वर्णन करता है:

> क्योंकि सृष्टि व्यर्थता के अधीन कर दी गई है, परन्तु अपनी ही इच्छा से नहीं, वरन् उसके कारण जिसने उसे अधीन कर दिया, इस आशा में कि सृष्टि स्वयं भी विनाश के दासत्व से मुक्त होकर परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करे। क्योंकि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर प्रसव-पीड़ा से अभी तक कराहती और तड़पती है। (रोमियों 8:20-22)

व्यर्थता। विनाश की दासत्व। कराहना। यह हैं वैश्विक विनाश और कष्ट के चित्र इस संसार में पाप के प्रवेश के बाद से। और पौलुस कहता है कि यह विनाश परमेश्वर के न्याय के कारण हुआ है: "सृष्टि व्यर्थता के *अधीन कर दी गई* है . . . उसके कारण जिसने उसे *अधीन कर दिया*, इस आशा में" (8:20)। शैतान ने इसे *आशा में* अधीन नहीं किया। आदम ने इसे *आशा में* अधीन नहीं किया। परमेश्वर ने ऐसा किया। रोमियों 5:16 में जैसे पौलुस ने कहा, "एक ही अपराध के कारण न्याय आरम्भ हुआ जिसका प्रतिफल दण्ड हुआ।"

उसकी सन्तान भी न्याय के अधीन हैं

यह बात सत्य है कि यह खण्ड आशा से परिपूर्ण है—यह "सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता" की बात करता है (रोमियों 8:21)। परमेश्वर ने नई सृष्टि के लिए एक आश्चर्यजनक योजना रखी है, जहां "वह उनकी आंखों से सब आँसू पोंछ डालेगा" (प्रकाशितवाक्य 21:4)। लेकिन अभी के लिए, हम सब उसके न्याय के अधीन हैं। उसने संसार को मृत्यु, आपदा, और दुख के अधीन किया है।

हाँ, उसने अपनी सन्तानों को भी अधीन किया है, जिनको उसने—"पहिले से ही . . . लेपालक पुत्र होने के लिए ठहराया" (इफिसियों 1:5), अपने पुत्र के लहू के द्वारा छुड़ाया (इफिसियों 1:7), और अनन्त जीवन के लिए ठहराया (इफिसियों 1:18)—हम भी पतन में परमेश्वर के न्याय के कारण कष्ट सहते हैं और मरते हैं। "स्वयं हम भी जिनके पास आत्मा का प्रथम फल है, अपने आप में कराहते हैं और अपने लेपालक पुत्र होने और देह के छुटकारे की बड़ी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे हैं" (रोमियों 8:23)। *मसीही लोग* सूनामी में बह जाते हैं। *मसीही लोग* आतंकवादी हमलों में मारे जाते हैं। *मसीही लोग* कोरोना वायरस से संक्रमित होते हैं।

शुद्धिकरण, दण्ड नहीं

मसीहियों के लिए—अर्थात् उन लोगों के लिए जो मसीह को अपने सर्वोच्च धन के रूप में थामते हैं—भिन्न बात यह है कि हम इस भ्रष्टता के अनुभव में दण्डित नहीं हैं। "अब उन पर जो मसीह यीशु में हैं, दण्ड की आज्ञा नहीं है" (रोमियों 8:1) हमारे लिए पीड़ा दण्डात्मक नहीं, किन्तु शुद्ध करने वाली है।

"परमेश्वर ने हमें प्रकोप के लिए नहीं ठहराया है" (1 थिस्सलुनीकियों 5:9)। सब मनुष्यों की तरह, हम भी बीमारी और आपदाओं से मरते हैं।

लेकिन उन लोगों के लिए जो मसीह में हैं, मृत्यु का "डंक" निकाल दिया गया है (1 कुरिन्थियों 15:55)। "मरना लाभ है" (फिलिप्पियों 1:21)। कूच करने का अर्थ है "मसीह के पास" जाना (फिलिप्पियों 1:23)।

शैतान वास्तविक और सीमित है

जब मैं इस संसार के दुखों को परमेश्वर के न्याय से जोड़ता हूँ, तो मैं अपनी आँखें इस बात के प्रति बंद नहीं कर रहा हूं कि हमारे वैश्विक दुख के पीछे शैतान का हाथ है। बाइबल उसे "इस संसार का ईश्वर" (2 कुरिन्थियों 4:4), और "इस संसार का शासक" (यूहन्ना 12:31), और "आकाश में शासन करने वाले अधिकारी" (इफिसियों 2:2) के रूप में दर्शाती है। वह "आरम्भ ही से हत्यारा" रहा है (यूहन्ना 8:44)। वह बांधता है और कई बीमारियों के द्वारा अत्याचार करता है (लूका 13:16; प्रेरितों के काम 10:38)।

लेकिन शैतान स्वयं भी एक रस्सी से बंधा हुआ है। और यह रस्सी परमेश्वर के हाथों में है। वह परमेश्वर की अनुमति के बिना कार्य नहीं करता है। वह केवल अनुमति के साथ और सीमाओं के भीतर ही कार्य करता है (अय्यूब 1:12; 2:6; लूका 22:31; 2 कुरिन्थियों 12:7)। शैतान द्वारा क्षति की सीमा अन्ततः परमेश्वर ही निर्धारित करता है। वह परमेश्वर के न्याय से परे नहीं है। वह अनजाने में—परमेश्वर के न्याय को कार्यान्वित करता है।

मुख्य प्रश्न

अब यह वह प्रश्न है जो कोरोना वायरस के अर्थ पर विशेष रीति से केन्द्रित है। परमेश्वर ने एक *नैतिक* बुराई के लिए संसार पर *शारीरिक* न्याय क्यों भेजा? आदम और हव्वा ने परमेश्वर के प्रति विद्रोह किया। उनके हृदय परमेश्वर से विमुख हो गए। उन्होंने परमेश्वर की बुद्धि के स्थान पर अपनी बुद्धि को

प्राथमिकता दी। उन्होंने भरोसे के स्थान पर स्वतंत्रता को चुना। यह *विद्रोह* और *प्राथमिकता* और *चुनना* एक आत्मिक और नैतिक बुराई थी। यह पाप पहले भीतर *प्राण* में किया गया था, न कि शरीर में। यह पाप पहले परमेश्वर के प्रति था, न कि मनुष्य के प्रति।

लेकिन नैतिक और आत्मिक विद्रोह के प्रतिउत्तर में, परमेश्वर ने *भौतिक* संसार को आपदा और दुख के अधीन किया। क्यों? क्यों न भौतिक संसार को अच्छी स्थिति में छोड़ कर मनुष्य के प्राण के ऊपर ही दुख लाया जाता, आखिरकार पाप का आरम्भ तो वहीं से हुआ था?

एक उत्तर

यह मेरा सुझाव है: परमेश्वर ने भौतिक संसार को श्राप के अधीन किया ताकि हमारे आस-पास हो रही बीमारियों और आपदाओं की शारीरिक भयानकता, पाप के भयानकपन का एक स्पष्ट चित्र हो सके। दूसरे शब्दों में, *शारीरिक बुराई एक दृष्टान्त है, एक चित्रण है, एक संकेत-चिन्ह है जो कि परमेश्वर के प्रति विद्रोह के नैतिक उपद्रव की ओर संकेत करता है।*

यह क्यों उचित है? क्योंकि पतन के बाद, अपनी वर्तमान स्थिति में, पाप से अंधे हो जाने पर, हम यह नहीं देख पाते हैं या न ही महसूस कर पाते हैं कि परमेश्वर के विरुद्ध पाप कितना घिनौना होता है। शायद ही दुनिया में कोई ऐसा है जो कि परमेश्वर के स्थान पर अन्य वस्तुओं को प्राथमिकता देने के घिनौनेपन को महसूस करता है। कौन है जो अपनी नींद को खोता है प्रतिदिन अपने द्वारा की गई परमेश्वर की उपेक्षा और अनादर के कारण?

लेकिन, ओह, हम अपने शारीरिक दर्द का कितना आभास करते हैं! यदि परमेश्वर हमारे शरीरों को छूता है तो हम कितना आग-बबुला हो जाते हैं! हम इस बात के लिए शोकित नहीं होते हैं कि हम अपने हृदयों में प्रतिदिन परमेश्वर

का अपमान करते हैं। लेकिन जब कोरोना वायरस आता है और हमारे शरीर को खतरे में डालता है, तब हमारा ध्यान परमेश्वर की ओर आता है। क्या यह वास्तव में होता है? *शारीरिक पीड़ा परमेश्वर की तुरही की पुकार की तरह है जो हमें बताती है कि संसार में कुछ भयानक रूप से गड़बड़ है। शारीरिक* दुनिया में बीमारी और विकृति परमेश्वर द्वारा बनाए गए चित्र हैं जो दिखाते हैं कि *आत्मिक* दुनिया में पाप कैसा दिखता है।

यह बात सत्य है, यद्यपि संसार के कुछ सबसे ईश्वरभक्त लोग उन बीमारियों और विकृति को सह रहे हैं। आपदायें परमेश्वर की ओर से झलक हैं यह दर्शाने के लिए कि पाप किस लायक है, और वह एक दिन इससे हज़ार गुना भयंकर न्याय प्राप्त करेगा। यह तो मात्र चेतावनी है। यह लोगों को निद्रा में से जगाने वाली आवाज़ें हैं ताकि वे परमेश्वर के प्रति पाप की नैतिक भयानकता और आत्मिक कुरूपता को देख सकें।

काश हम सब देख पाते और एहसास कर पाते कि अपने सृजनहार को अपमानित करना, अनदेखा करना, भरोसा न करना, तुच्छ जानना और जितना ध्यान हम अपने बालों को बनाने में देते हैं उससे कम ध्यान परमेश्वर को देना, अखिरकार कितना घिनौना, अपमान जनक, तथा घटिया है।

हमें इसे देखना और इसे महसूस करना है, नहीं तो हम पाप की कुरूपता से उद्धार के लिए मसीह की ओर नहीं फिरेंगे। हम पाप के *दण्ड* से बचने के लिए रो सकते हैं लेकिन क्या हम परमेश्वर को तुच्छ ठहराने वाले, पाप की नैतिक *कुरूपता* को देखेंगे और उससे घृणा करेंगे? यदि हम ऐसा नहीं करते हैं, तो वह इस कारण नहीं होगा कि परमेश्वर ने शारीरिक दुखों में स्पष्ट चित्रण प्रदान नहीं किए हैं—जैसे कि कोरोना वायरस। इसलिए, परमेश्वर इन दिनों में हम पर दया में होकर चिल्लाकर कह रहा है: जागो, उठो! परमेश्वर के विरुद्ध

पाप ऐसा होता है! यह भयानक और कुरूप है। और कोरोना वायरस की तुलना में कहीं अधिक खतरनाक है।

अध्याय 7

विशेष ईश्वरीय न्याय को भेजना

उत्तर 2

कुछ लोग अपने पापी व्यवहार और कार्यों के कारण
परमेश्वर के विशिष्ट न्याय के रूप में
कोरोना वायरस से संक्रमित होंगे।

यह सत्य है कि सब क्लेश उस पतन का प्रतिफल है—अर्थात् संसार में परमेश्वर को तुच्छ ठहराने वाले पाप के प्रवेश का परिणाम—परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि सब लोगों के व्यक्तिगत क्लेश उनके व्यक्तिगत पाप के लिए एक स्पष्ट न्याय है। उदाहरण के लिए, अय्यूब की पीड़ा उसके व्यक्तिगत विशेष पापों के कारण नहीं थी। उस पुस्तक का पहला वाक्य ही इस बात को स्पष्ट कर देता है: “अय्यूब . . . निर्दोष, खरा तथा परमेश्वर का भय मानने वाला था, और बुराई से दूर रहता था” (अय्यूब 1:1)।

और जैसा कि हमने पहले देखा, स्वयं परमेश्वर के लोग भी उसके न्याय के कई शारीरिक प्रभावों को अनुभव करते हैं। प्रेरित पतरस ने इसे इस प्रकार प्रस्तुत किया है:

> क्योंकि समय आ गया है कि *परमेश्वर के घराने* से ही न्याय का आरम्भ हो। अतः यदि न्याय का आरम्भ *हम से* ही होगा तो उनका क्या परिणाम होगा जिन्होंने परमेश्वर के सुसमाचार का पालन नहीं किया? "यदि धर्मी व्यक्ति कठिनाई से ही उद्धार प्राप्त करेगा, तो ईश्वर-रहित और पापी मनुष्य की क्या दशा होगी?" (1 पतरस 4:17-18)

"परमेश्वर के घराने" के लिए यह न्याय परमेश्वर की ओर से *दण्ड* हेतु नहीं वरन *शुद्ध करने* के लिए है—*सज़ा* नहीं। इसलिए ऐसा नहीं है कि सारे दुख मनुष्यों के विशिष्ट पापों के प्रति परमेश्वर के विशेष न्याय के कारण होते हैं। लेकिन फिर भी, परमेश्वर कभी-कभी उन लोगों पर विशेष न्याय लाने के लिए बीमारी का उपयोग करता है, जो उसका तिरस्कार करते हैं और स्वयं को पाप के लिए समर्पित कर देते हैं।

विशेष पापों के लिए स्पष्ट न्याय के उदाहरण

मैं आप को विशेष पापों के लिए स्पष्ट न्याय के दो उदाहरण दूँगा।

प्रेरितों के काम 12 अध्याय में, राजा हेरोदेस को जब ईश्वर कहा गया, तो उसने उस बात को स्वीकार करने के द्वारा अपने आप को ऊँचे पर उठाया। "उसी क्षण प्रभु के एक दूत ने उसे मारा, क्योंकि उसने परमेश्वर को महिमा नहीं दी। उसके शरीर में कीड़े पड़ गए और उसने दम तोड़ दिया" (प्रेरितों के काम 12:23)। परमेश्वर ऐसा उन सब लोगों के साथ कर सकता है जो अपने आप को ऊँचे पर उठाते हैं। इसका अर्थ यह है कि हमें आश्चर्य करना चाहिए

कि परमेश्वर और मनुष्य के समक्ष अपने अहंकार के कारण हर दिन हमारे और शासक मर क्यों नहीं जाते हैं। परमेश्वर का संयम एक महान दया है।

एक और उदाहरण है समलैंगिक संभोग का पाप। रोमियों 1:27 में, प्रेरित पौलुस कहता है, "और इसी प्रकार पुरुष भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक क्रिया को छोड़ कर आपस में कामातुर हो कामाग्नि में जलने लगे, पुरुषों ने पुरुषों के साथ निर्लज्ज कार्य करके अपने ही में भ्रष्टाचार का उचित दण्ड पाया।" यह "उचित दण्ड" उनके "स्वयं अपने ही" पाप का कष्टपूर्ण प्रभाव है।

यह "उचित दण्ड" परमेश्वर के उस न्याय का एक उदाहरण है जिसे हम रोमियों 1:18 में देखते हैं, जहां लिखा है, "परमेश्वर का प्रकोप मनुष्यों की समस्त अभक्ति और अधार्मिकता पर स्वर्ग से प्रकट होता है, क्योंकि वे सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।" इसलिए, सब क्लेश विशिष्ट पापों के लिए एक विशेष न्याय नहीं हैं, परन्तु इनमें से कुछ न्याय विशिष्ट अवश्य हैं।

प्रत्येक प्राण जांचा जाए

इस कारण, कोरोना वायरस किसी भी व्यक्ति पर स्पष्ट और सीधा दण्ड नहीं है। एक अत्यन्त प्रेमी, आत्मा से परिपूर्ण मसीही, जिसके पाप मसीह के द्वारा क्षमा किए गए हैं, वह भी कोरोना वायरस की बीमारी से मर सकता है। लेकिन यह उचित है कि हम में से प्रत्येक जन अपने हृदय को जांचें और परख कर देखें कि कहीं हमारा दुख हमारे जीने के तरीके के कारण परमेश्वर का न्याय तो नहीं है।

यदि हम मसीह के पास आते हैं, तो हम जान सकते हैं कि हमारा दुख परमेश्वर का दण्डात्मक न्याय नहीं है। हम यह इसलिए जानते हैं क्योंकि यीशु ने कहा, "जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजने वाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है, *और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती*, पर मृत्यु से पार

होकर वह जीवन में प्रवेश कर चुका है” (यूहन्ना 5:24)। उन लोगों पर कोई दण्ड की आज्ञा नहीं है जो मसीह यीशु में हैं (रोमियों 8:1)। यह अनुशासन है, विनाश नहीं है। “क्योंकि प्रभु जिससे प्रेम करता है उसकी ताड़ना भी करता है, और जिसे पुत्र बना लेता है, उसे कोड़े भी लगाता है” (इब्रानियों 12:6)।

अध्याय 8

द्वितीय आगमन के लिए हमें जागृत करना

उत्तर 3

कोरोना वायरस परमेश्वर द्वारा हमें जागृत करने का प्रयास है ताकि हम मसीह के द्वितीय आगमन के लिए तैयार रहें।

यद्यपि मसीही कलीसिया का इतिहास संसार के समाप्त होने की असफल भविष्यवाणियों से भरा पड़ा है, फिर भी यह बात सत्य है कि यीशु मसीह वापस आने वाला है। यीशु के स्वर्गारोहण के समय स्वर्गदूत ने कहा, "गलीली पुरुषों, तुम खड़े-खड़े आकाश की ओर क्यों देख रहे हो? यही यीशु जो तुम्हारे पास से स्वर्ग पर उठा लिया गया है, वैसे ही फिर आएगा जैसे तुमने उसे स्वर्ग में जाते देखा है" (प्रेरितों के काम 1:11)।

जब वह आएगा, तब वह संसार का न्याय करेगा:

> पर जब मनुष्य का पुत्र अपनी महिमा में आएगा और सब स्वर्गदूत उसके साथ आएंगे, तो वह अपने महिमामय सिंहासन पर विराजमान

> होगा। और सब जातियां उसके सम्मुख एकत्रित की जाएंगी; और वह उन्हें एक दूसरे से अलग करेगा, जैसे चरवाहा भेड़ों को बकरियों से अलग करता है। (मत्ती 25:31-32)

वह दिन उन लोगों के लिए जो मसीह से मिलने के लिए तैयार नहीं हैं, अचानक एक फन्दे के समान आएगा:

> सावधान रहो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे हृदय दुराचार, पियक्कड़पन और जीवन की चिन्ताओं के भार से दब जाएं और वह दिन एकाएक तुम पर फन्दे की भांति आ जाए। (लूका 21:34)

प्रसव-पीड़ा

यीशु ने कहा कि उसके आगमन से पहले कुछ चिन्ह होंगे—जैसे युद्ध, अकाल और भूकम्प (मत्ती 24:7)। उसने इनको "पीड़ाओं का आरम्भ" कहा (मत्ती 24:8)। यहां पृथ्वी को एक ऐसी महिला के रूप में चित्रित किया गया है जो प्रसव में है और नई सृष्टि को जन्म देने का प्रयास कर रही है, जिसे यीशु अपने आगमन के समय प्रकट करेगा।

पौलुस रोमियों 8:22 में इस चित्रण का पुनः उपयोग करता है और इस युग की *सभी* कष्ट पूर्ण कराहने की आवाज़ों को प्रसव-पीड़ा कह कर वर्णन करता है—सारी आपदाएं और बीमारियां (जैसे कोरोना वायरस)। उसने हमारी बीमारियों को भी संसार की प्रसव-पीड़ा के हिस्से के रूप में चित्रित किया है। हम कराहते हुए यीशु के आगमन पर अपनी देह के छुटकारे की प्रतीक्षा करते हैं, अर्थात् उस दिन के लिए जब वह मृतकों को जिला उठाएगा और हमें नई, महिमामय देह देगा (फिलिप्पियों 3:21):

> सृष्टि स्वयं भी विनाश के दासत्व से मुक्त होकर परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करे। क्योंकि हम जानते हैं कि सम्पूर्ण सृष्टि मिलकर *प्रसव-पीड़ा* से अभी तक कराहती और तड़पती है। और न केवल यह, परन्तु स्वयं हम भी जिनके पास आत्मा का प्रथम फल है, अपने आप में कराहते हैं और अपने लेपालक पुत्र होने और देह के छुटकारे की बड़ी उत्कण्ठा से प्रतीक्षा कर रहे हैं। (रोमियों 8:21-23)

जागते रहो!

मैं मुख्य बात यह कहना चाह रहा हूँ कि: यीशु चाहता है कि जब हम इन प्रसव-पीड़ा के चिह्नों को देखें (जिनमें कोरोना वायरस भी सम्मलित है), तो हमें स्मरण रखना चाहिए तथा इस बात के प्रति सतर्क रहना चाहिए कि वह आ रहा है, और हमें तैयार रहने की आवश्यकता है। "तुम . . . भी तैयार रहो। मनुष्य का पुत्र उस घड़ी आ जाएगा जबकि तुम सोचते भी नहीं" (मत्ती 24:44)।

यीशु की बातों को गंभीरता से लेने के लिए आपको तिथि निर्धारित नहीं करनी है। यीशु की बातें अचूक हैं: "सावधान हो जाओ, *जागते रहो* . . . क्योंकि तुम नहीं जानते कि वह निर्धारित समय कब आएगा . . . *जागते रहो*— क्योंकि तुम नहीं जानते कि घर का स्वामी कब आएगा . . . और जो मैं तुमसे कहता हूं, वही सब से कहता हूं: *जागते रहो!"* (मरकुस 13:33-37)।

यह सन्देश तो स्पष्ट है। जागते रहो। जागते रहो। जागते रहो। और प्राकृतिक संसार की प्रसव-पीड़ाएं इस ही सन्देश को प्रस्तुत करती हैं। परन्तु आज, कितने ही लोग जाग नहीं रहे हैं! वह अपनी दिनचर्या के कार्यों में अत्यधिक व्यस्त हैं, परन्तु यीशु मसीह के आने के सम्बन्ध में वे गहरी नींद में सो रहे हैं। खतरा बहुत बड़ा है। और कोरोना वायरस, हमें तैयार रहने के लिए परमेश्वर की ओर से, एक दया पूर्ण जागृत करने वाली पुकार है।

तैयार होने का तरीका यह है कि आप यीशु मसीह के पास आएं, पापों की क्षमा प्राप्त करें और उसकी ज्योति में चलें। फिर आप उन लोगों में से होंगे जोः

> अन्धकार में नहीं हो कि वह दिन तुम पर चोर के समान आ पड़े, क्योंकि तुम सब ज्योति की सन्तान हो . . . अतः हम सजग और सतर्क रहें . . . क्योंकि परमेश्वर ने हमें प्रकोप के लिए नहीं, परन्तु हमारे प्रभु यीशु के द्वारा उद्धार प्राप्त करने के लिए ठहराया है, जो हमारे लिए मर गया कि चाहे हम जागते या सोते हों, हम सब मिलकर उसके साथ जीवित रहें। (1 थिस्सलुनीकियों 5:4-10)

अध्याय 9

हमें पुनः मसीह के असीम मूल्य की ओर फेरना

उत्तर 4

कोरोना वायरस हम सब के लिए पश्चात्ताप करने
और अपने जीवन को मसीह के असीम मूल्य की ओर फिरने के लिए
परमेश्वर की ऊँची वाणी है।

कोरोना वायरस पश्चात्ताप हेतु कोई अनोखी पुकार नहीं है। वास्तव में, सभी प्राकृतिक आपदाएं—चाहे वे बाढ़, अकाल, टिड्डियाँ, सूनामी, या बीमारियाँ हो—पश्चाताप करने के लिए परमेश्वर के कष्टपूर्ण और दया से भरे हुए आह्वान हैं।

हम इस बात को लूका 13:1-5 में आपदा के प्रति-उत्तर में यीशु के द्वारा कही गई बात में देखते हैं:

> उसी समय वहाँ कुछ लोग उपस्थित थे जिन्होंने उसे उन गलीलियों के विषय बताया जिनका लहू पिलातुस ने उन्हीं के बलिदानों के साथ मिलाया। उसने उत्तर देते हुए उनसे कहा, “क्या तुम समझते हो कि

> ये गलीली अन्य सब गलीलियों से अधिक पापी थे कि उनकी यह दशा हुई? मैं तुमसे कहता हूँ नहीं! परन्तु जब तक तुम मन न फिराओ तुम सब भी इसी प्रकार नाश हो जाओगे। या, तुम समझते हो कि वे अठारह व्यक्ति जिन पर शिलोह का गुम्मट गिरा और दबकर मर गए, यरूशलेम में रहने वालों से अधिक अपराधी थे? मैं कहता हूँ नहीं, परन्तु जब तक तुम मन न फिराओ तुम सब भी इसी प्रकार नाश हो जाओगे।"

पिलातुस ने आराधना करने वालों को मन्दिर में घात किया था। शिलोह में गुम्मट गिरा और उसके पास खड़े अठारह लोग मारे गए थे। पहली विपत्ति तो मनुष्य की दुष्टता का परिणाम थी। परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि दूसरी तो एक दुर्घटना थी।

आपदा का अर्थ—आपके लिए

भीड़ यीशु से जानना चाहती थी कि, "इसका अर्थ क्या है? क्या यह किसी खास पाप के कारण परमेश्वर का एक स्पष्ट न्याय का कार्य था?" यीशु का उत्तर अद्भुत है। वह बताता है कि इन आपदाओं का तात्पर्य न केवल मरने वालों के लिए परन्तु सब के लिए है। दोनों घटनाओं के बारे में वह कहता है कि, "ऐसा नहीं है कि पिलातुस द्वारा घात किए गए लोग और गुम्मट के तले कुचले लोग—तुम लोगों से अधिक पापी थे।"

हाँ तुम लोग? वह *उनके* पाप का वर्णन क्यों करता है? वे *अपने* पाप के विषय में उसके विचार नहीं जानना चाह रहे थे। वे दूसरों के बारे में जानने की जिज्ञासा रखते थे। वे जानना चाहते थे कि आपदाओं का अर्थ उन पीड़ितों के लिए क्या है, न कि बाकी लोगों के लिए।

इसीलिए तो यीशु का उत्तर अद्भुत है। मूलतः उसने यह कहा कि इन आपदाओं का अर्थ *सभी* के लिए है। और सन्देश यह है कि "मन फिराओ या फिर नाश हो जाओ।" वह इस बात को दो बार कहता है: "जब तक तुम मन न फिराओ तुम सब भी इसी प्रकार नाश हो जाओगे" (लूका 13:3)। "जब तक तुम मन न फिराओ तुम सब भी इसी प्रकार नाश हो जाओगे" (लूका 13:5)।

एक दयापूर्ण बुलाहट जब तक समय है

यीशु यहाँ क्या कर रहा था? वह लोगों के अचम्भे को सही दिशा दे रहा था। जिस अचम्भे के कारण उन्होंने प्रश्न किया, वह सही नहीं थी। वे अचम्भित थे कि लोगों की हत्या इतनी क्रूरता से की गई तथा इतने निरर्थक रीति से कुचल दिए गए। लेकिन यीशु कहता है, "तुम्हें यह अचम्भा करना चाहिए कि *तुम्हारी* हत्या नहीं हुई और न ही *तुम* कुचले गए हो। वास्तव में, यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे, तो तुम भी किसी दिन इसी तरह के न्याय का सामना करोगे।"

इससे, मैं यह निष्कर्ष पर आता हूँ कि इस तरह की सभी आपदाओं में परमेश्वर का एक दया से पूर्ण सन्देश होता है। और वह सन्देश यह है कि हम सब पापी हैं और विनाश की ओर बढ़ रहे हैं, तथा यह आपदाएं परमेश्वर की ओर से समय रहते हुए पश्चात्ताप करके बचने हेतु अनुग्रह-पूर्ण आह्वान हैं। यीशु ने मरे हुओं से फिर कर जीवित लोगों से मूलतः यह कहा, "आओ हम मरे हुओं के विषय में बातें न करें वरन् *तुम्हारे* बारे में बात करें। यह अत्यावश्यक है। उनके साथ जो कुछ हुआ है, वह *तुम* से वास्ता रखता है। तुम्हारी सबसे बड़ी समस्या *उनका* पाप नहीं बल्कि *तुम्हारे* स्वयं का पाप है।" मैं सोचता हूं कि इस कोरोना वायरस की आपदा के समय में संसार के लिए परमेश्वर का

यही सन्देश है। वह संसार को पश्चात्ताप करने के लिए बुला रहा है, अभी जब तक समय बाकी है।

पश्चात्ताप का अर्थ क्या है?

आइए हम और स्पष्ट रीति से बात करें। *पश्चात्ताप* का अर्थ क्या है? नये नियम में इस शब्द का अर्थ है हृदय और मन का परिवर्तन। केवल विचारों का ऊपरी रीति से बदलना ही नहीं किन्तु एक गहरा परिवर्तन ताकी हम परमेश्वर और यीशु को वैसे देखें और बहुमूल्य जाने जैसा कि वे वास्तव मे हैं। यीशु ने इस परिवर्तन का वर्णन ऐसे किया है:

> तू प्रभु अपने परमेश्वर से अपने सारे हृदय और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि से प्रेम कर। (मत्ती 22:37)

> जो मुझ से अधिक अपने माता या पिता से प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं। जो मुझ से अधिक अपने पुत्र या पुत्री से प्रेम करता है, वह मेरे योग्य नहीं है। (मत्ती 10:37)

दूसरे शब्दों में, पश्चात्ताप इस प्रकार हृदय और मन के आधारभूत परिवर्तन की मांग करता है कि आप परमेश्वर को अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से और यीशु को अपने सभी सम्बन्धों से अधिक बहुमूल्य जानेंगे।

यीशु हमें नाश होने की धमकी क्यों देता है?

इसी कारण यीशु ने कहा कि यदि हम पश्चाताप न करें तो हम सब भी नाश हो जायेंगे, क्योंकि हम सब ने परमेश्वर को जो कि बहुमूल्य धन है, उन सस्ती वस्तुओं से विस्थापित कर दिया है जिनसे हम अधिक प्रेम करते हैं (रोमियों 1:22-23), और हम सब ने यीशु को पैसे, मनोरंजन, मित्रों और परिवार से

कम चाहने योग्य समझा है। हम सब नाश होने के लायक हैं किन्तु इसलिए नहीं क्योंकि हमने किसी नियमों की सूची का उल्लंघन किया है किन्तु इसलिए क्योंकि हमने उस असीम मूल्य का तिरस्कार किया है—वह असीम मूल्य जो यीशु मसीह में होकर परमेश्वर हमारे लिए सब कुछ है।

आत्मघाती इच्छाओं से जागना

पश्चात्ताप का अर्थ है उन आत्मघाती इच्छाओं से जागना, जिनमें हम सोने के स्थान पर लोहे, चट्टान के स्थान पर बालू पर नींव, और समुद्र तट पर अवकाश के स्थान पर नाली में खेलने को चुनते हैं। जैसे *सी. एस. लूइस* लिखते हैं:

> हम अधूरे-मन के प्राणी हैं, जो अपने सामने रखे हुए *असीम आनन्द* के स्थान पर शराब, यौन-क्रिया और महत्वाकांक्षा के साथ खिलवाड़ करते हैं। हम एक अज्ञानी बालक के समान हैं जो झुग्गियों के बीच में मिट्टी के खिलौने बनाते रहना चाहता है क्योंकि वह यह कल्पना ही नहीं कर सकता कि समुद्र तट पर अवकाश का अर्थ क्या है। हम बहुत छोटी-छोटी बातों में सरलता से प्रसन्न हो जाते हैं।[5]

जिस "असीम आनन्द" की बात *लूइस* करते हैं, वह है मसीह का मूल्य, उसकी सुन्दरता और उसकी महानता को देखना, चखना और सहभागी होने का अनुभव।

मसीह पर भरोसा रखने के लिए जागृति

कोरोना वायरस में परमेश्वर हमें—स्पष्ट और कष्ट-पूर्ण रीति से—दिखा रहा है कि इस संसार की कोई भी वस्तु वह सुरक्षा और संतुष्टि नहीं दे सकती है जो हम यीशु की अनन्त महानता और उसके मूल्य में प्राप्त करते हैं। यह वैश्विक

महामारी हमारी आवागमन की स्वतंत्रता, हमारी व्यावसायिक गति-विधि, और हमारे आमने-सामने के सम्बन्धों को छीन लेती है। यह हमारी सुरक्षा और हमारे आराम को छीन लेती है। और अन्ततः यह हमारे जीवन को भी छीन सकती है।

परमेश्वर हम पर इस तरह की हानियों को इसलिए प्रकट करता है ताकि हम मसीह पर भरोसा रखने के लिए जागृत हों। या इसे दूसरी तरह से कहें, तो वह संसार के समक्ष मसीह को प्रस्तुत करने के लिए आपदा को इसलिए अवसर बनाता है क्योंकि मसीह की सर्वोच्च, सम्पूर्ण संतुष्टि प्रदान करने वाली महानता तब अत्यधिक तेज़ चमकती है जब मसीह दुख के मध्य आनन्द को बनाए रखता है।

हताशा का वरदान

उदाहरण के लिए, सोचिए कि परमेश्वर पौलुस को उस हद तक क्यों ले गया जहां उसने जीने की भी आशा को छोड़ दिया:

> क्योंकि हे भाइयो, हम यह नहीं चाहते कि तुम उस क्लेश से अनजान रहो जो हमको एशिया में सहना पड़ा। हम ऐसे भारी बोझ से दब गए थे जो हमारे सामर्थ्य से बाहर था, यहां तक कि हम जीवन की आशा भी छोड़ बैठे थे। वास्तव में, हमें ऐसा लगा जैसा कि हम पर मृत्यु-दण्ड की आज्ञा हो चुकी हो, जिससे कि हम अपने आप पर नहीं वरन् परमेश्वर पर भरोसा रखें जो मृतकों को जिला उठाता है। (2 कुरिन्थियों 1:8-9)

पौलुस हताशा के इस अनुभव को शैतान की ओर से या दिशाहीन नहीं मानता है। यह उद्देश्य पूर्ण है। और वह परमेश्वर ही है जिसका उद्देश्य यहाँ उल्लेखित

है: यह जीवन को खतरे में डालने वाला अनुभव इसलिए हुआ ताकि “हम अपने आप पर नहीं वरन् परमेश्वर पर भरोसा रखें जो मृतकों को जिला उठाता है” (1:9)।

यही है कोरोना वायरस का सन्देश: आत्मनिर्भर होना बंद करो और परमेश्वर की ओर फिरो। आप मृत्यु को तो *रोक* नहीं सकते हैं। परन्तु परमेश्वर मृतकों को *जिला* सकता है। और हाँ, “परमेश्वर पर निर्भर” होने का अर्थ यह नहीं है कि मसीही लोग निठल्ले बन जाएं। मसीही लोग कभी भी निठल्ले नहीं हो सकते हैं। बल्कि इसका अर्थ यह है कि हमारे सब कार्यों का आधार, नमूना और लक्ष्य परमेश्वर ही है। जैसा कि पौलुस ने कहा, “मैंने उन सब से बढ़कर परिश्रम किया, फिर भी मैंने नहीं, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह ने मेरे साथ मिलकर किया”(1 कुरिन्थियों 15:10)।

कोरोना वायरस हमें परमेश्वर को अपने जीवन की सबसे महत्वपूर्ण तथा व्यापक वास्तविकता बनाने के लिए बुला रहा है। हमारा जीवन श्वास से कहीं अधिक परमेश्वर पर निर्भर करता है। और कभी-कभी परमेश्वर हमारे श्वासों को ले लेता है ताकि हम उसके पास चले जाएं।

कांटों का अर्थ

या फिर पौलुस की देह में एक कष्ट-पूर्ण कांटा देने में परमेश्वर के उद्देश्य के विषय में सोचिए:

> प्रकाशनों की अधिकता के कारण मैं घमण्ड न करूं, इसलिए मेरी देह में एक कांटा चुभाया गया है, अर्थात् शैतान का एक दूत, कि वह मुझे दुख दे और घमण्ड करने से रोके रहे। मैंने इसके विषय में प्रभु से तीन बार प्रार्थना की कि यह मुझ से दूर हो जाए। और उसने मुझ से कहा, “मेरा अनुग्रह तेरे लिए पर्याप्त है, क्योंकि मेरा सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध

> होता है।" अतः मैं सहर्ष अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा। (2 कुरिन्थियों 12:7-9)

पौलुस को महान प्रकाशनों की आशीष मिली थी। इसमें परमेश्वर को घमण्ड का खतरा दिखाई दिया। किन्तु इसमें शैतान को सत्य और आनन्द का खतरा दिखाई दिया। परमेश्वर ने शैतान की चाल को इस तरह नियंत्रित किया कि यद्यपि शैतान ने सोचा कि पौलुस की गवाही अब बर्बाद हो जाएगी परन्तु वहीं बात वास्तव में पौलुस को नम्रता और आनन्द प्रदान करती है। पौलुस की देह में एक कांटा चुभा—जो कि "शैतान का एक दूत" है। लेकिन वह स्वंय तो परमेश्वर का दूत था! हम नहीं जानते कि यह कांटा क्या है। परन्तु हम जानते हैं कि कांटे पीड़ादायक होते हैं। और हम जानते हैं कि पौलुस ने तीन बार विनती की कि मसीह इसे हटा दे।

लेकिन मसीह ऐसा नहीं करेगा। इस कष्ट के पीछे उसका एक उद्देश्य है। अर्थात् "मेरा सामर्थ्य निर्बलता में सिद्ध होता है" (12:9)। उसका उद्देश्य यह है कि पौलुस के अटूट विश्वास और आनन्द के द्वारा मसीह उसके स्वास्थ्य की तुलना में अधिक मूल्यवान प्रतीत होगा। इस उद्देश्य के प्रतिउत्तर में पौलुस की प्रतिक्रिया क्या है? "मैं *सहर्ष* अपनी निर्बलताओं पर घमण्ड करूंगा" (12:9)।

सहर्ष! यह कैसे सम्भव है? पौलुस इस काँटे को आनन्द के साथ स्वीकार करने के लिए तैयार क्यों है? क्योंकि उसके जीवन का सबसे महान लक्ष्य यह है कि चाहे जीवन के द्वारा या मृत्यु के द्वारा मसीह की महिमा उसकी देह में होती रहे (फिलिप्पियों 1:20)। पौलुस का आनन्द था—मसीह की सुंदरता को निहारने में, मसीह को सर्वोच्च धन के रूप में संजोने में, और संसार के समक्ष मसीह को स्वास्थ्य और जीवन से अधिक उत्तम प्रकट करने में। *मार्था स्नेल*

निकल्सन (1898-1953) द्वारा लिखित *"द थॉर्न"* (कांटा) नाम की सुंदर कविता का अंत इस प्रकार होता है:

> मैंने यह सीखा है कि बिना अनुग्रह के वह कांटा भी नहीं देता है,
> और फिर उसी कांटे से अपने चेहरे पर से पर्दा हटा भी देता है।

हानि में लाभ

पौलुस का हानि को अपनाने का एक कारण यह था कि हानि में ही उसे मसीह और अधिकता से प्राप्त हुआ था:

> इससे भी बढ़कर मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के ज्ञान की श्रेष्ठता के कारण सब बातों को तुच्छ समझता हूं। जिसके कारण मैंने सब वस्तुओं की हानि उठाई है और उन्हें कूड़ा समझता हूं जिस से मैं मसीह को प्राप्त करूं। (फिलिप्पियों 3:8)

पश्चाताप करने का अर्थ यही है: कि हृदय और मन एक ऐसे परिवर्तन को अनुभव करते हैं, जो मसीह में होकर परमेश्वर को जीवन से भी अधिक मूल्यवान जानते हैं। "क्योंकि तेरी करुणा *जीवन से भी उत्तम है,* मेरे होंठ तेरी प्रशंसा करेंगे" (भजन संहिता 63:3)। यह पौलुस का विश्वास था। यह जीवन और मृत्यु में सत्य था। जीवन में, क्योंकि मसीह हर एक आनन्द की मिठास है, बल्कि सब से श्रेष्ठ है। और मृत्यु में, क्योंकि "[परमेश्वर] की उपस्थिति में आनन्द की भरपूरी है; [उसके] दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है" (भजन संहिता 16:11)।

कोरोना वायरस की महामारी हानि का अनुभव है। छोटी सी असुविधा की हानि से लेकर मृत्यु की बड़ी हानि तक। और यदि हम पौलुस के आनन्द के

रहस्य को जानते हैं, तो हम हानि को लाभ के रूप में अनुभव कर सकते हैं। परमेश्वर इसी बात को संसार से कह रहा है। पश्चाताप करो और मसीह के असीम मूल्य की ओर फिरो।

अध्याय 10

संकट के समय में भले कार्य करना

उत्तर 5

कोरोना वायरस के द्वारा परमेश्वर अपने लोगों को पुकार रहा है कि वे आत्मदया और भय पर विजय प्राप्त करके, एक साहस पूर्ण आनन्द के साथ, भले कार्य करें ताकि परमेश्वर को महिमा मिले।

यीशु ने अपने शिष्यों को यह शिक्षा दी कि "तुम्हारा प्रकाश मनुष्यों के सम्मुख इस प्रकार चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, महिमा करें" (मत्ती 5:16)। यह अक्सर ध्यान नहीं दिया जाता है कि इस तरह से पृथ्वी का नमक और जगत की ज्योति होने का अर्थ यह है कि अधिक नमकीन होना और अधिक ज्योर्तिमय होना क्योंकि यह भले कार्य कष्ट के मध्य में किये जाने हैं।

संकट के अंधकार में चमकना

यीशु ने अभी-अभी यह कहा था कि, "धन्य हो तुम, जब लोग मेरे कारण तुम्हारी निन्दा करें, तुम्हें यातना दें और झूठ बोल बोलकर तुम्हारे विरुद्ध सब

प्रकार की बातें कहें - आनन्दित और मग्न हो, क्योंकि स्वर्ग में तुम्हारा प्रतिफल महान् है”(मत्ती 5:11-12)। और इसके बाद, बिना रुके वह यह कहता है, “तुम पृथ्वी के नमक हो . . . तुम जगत की ज्योति” (मत्ती 5:13-16)।

यह केवल भले कार्य ही नही हैं जो मसीहियत को नमकीन स्वाद और चमक प्रदान करते हैं। किन्तु यह तो वह भले कार्य हैं जो संकट के मध्य में भी किये जाते हैं। अनेक गैर-मसीही भले कार्य करते हैं। परन्तु शायद ही कभी लोग उनके कारण परमेश्वर को महिमा देते हैं।

जी हां, मत्ती 5 में संकट सताव का था, न कि किसी बीमारी का। परन्तु सिद्धांत तो वही है। प्रेम के कार्य संकट के सन्दर्भ में, चाहे बीमारी हो या सताव, इस तथ्य की ओर अधिक स्पष्ट रूप से संकेत करते हैं कि ये कार्य परमेश्वर में आशा के कारण स्थिर रहते हैं। उदाहरण के लिए, यीशु ने कहा:

> जब तू भोज करे तो कंगालों, विकलांगों, लंगड़ों और अंधों को आमन्त्रित करना। तब तू आशीषित होगा, क्योंकि उनके पास कोई ऐसा साधन नहीं कि वे तुझे बदला दें, परन्तु धर्मियों के जी उठने पर तुझे प्रतिफल मिलेगा। (लूका 14:13-14)

मृत्यु के बाद भी परमेश्वर में आशा (“धर्मियों के जी उठने पर तुझे प्रतिफल मिलेगा”) उन भले कार्यों को बनाए रखता है तथा सशक्त करता है जिनसे इस जीवन में प्रतिफल मिलने की कोई संभावना नहीं है। यही बात उन भले कार्यों पर भी लागू होती है जो हमें संकट में डालते हैं, विशेष रीति से मृत्यु के संकट में।

पतरस ने कैसे यीशु की शिक्षा को लागू किया

प्रेरित पतरस ने, नए नियम के किसी भी अन्य लेखक की तुलना में, भले कार्यों के विषय में यीशु की स्पष्ट शिक्षा का उल्लेख किया है:

> अन्यजातियों के मध्य अपना चाल-चलन उत्तम बनाए रखो, जिस से वे जिन बातों में कुकर्मी कहकर तुम्हारी निन्दा करते हैं, उन्हीं बातों में तुम्हारे भले कामों को देख कर न्याय के दिन परमेशवर की महिमा करे। (1 पतरस 2:12)

और पतरस यही बात संकट के समय में भले कार्यों के विषय में भी कहता है। वह कहता है, "इसलिये वे भी जो परमेश्वर की इच्छा के अनुसार दुख उठाते हैं, उचित कार्य करते हुए अपने अपने प्राण को विश्वासयोग्य सृष्टिकर्ता के हाथों में सौंप दें" (1 पतरस 4:19)। दूसरे शब्दों में, कष्ट की संभावना या वास्तविकता, आपको भले कार्य करने से न रोकने पाए।

यीशु मरा संकट के मध्य भले कार्यों हेतु

पतरस इस नए प्रकार के जीवन को हमारे पापों के लिए यीशु की मृत्यु के साथ जोड़ता है: "[मसीह ने] स्वयं अपनी ही देह में क्रूस पर हमारे पापों को उठा लिया, जिस से हम पाप के लिए मरें और *धार्मिकता के लिए जीवन व्यतीत करें"* (1 पतरस 2:24)। मसीह के कारण, मसीही पाप का वध करते हैं और स्वयं को धार्मिकता के भले कार्यों में लगा देते हैं।

पौलुस भी यीशु की मृत्यु और मसीहियों में भले कार्य के लिए उत्साह के मध्य में वही सम्बन्ध को दर्शाता है: "[मसीह ने] अपने आपको हमारे लिए दे दिया कि हमें हर प्रकार के अधर्म से छुड़ा ले और हमें शुद्ध करके अपने लिए

एक ऐसी निज प्रजा बना ले जो *भले कार्य करने के लिए सरगर्म* हो” (तीतुस 2:14)।

पौलुस यह भी स्पष्ट करता है कि ये भले कार्य मसीहियों और गैर-मसीहियों दोनों के लिए हैं। “इसलिए जहां तक अवसर मिले *सब के साथ* भलाई करें, विशेष कर विश्वासी भाइयों के साथ” (गलतियों 6:10)। “ध्यान रखो कि कोई बुराई के बदले किसी से बुराई न करे, परन्तु सर्वदा एक दूसरे की *तथा सब लोगों की* भलाई करने में प्रयत्नशील रहे” (1 थिस्सलुनीकियों 5:15)।

जोखिम पूर्ण करुणा मसीह को ऊँचा करती है

अपने लोगों के लिए परमेश्वर का परम लक्ष्य यह है कि हम उसकी महानता की महिमा करें और उसके पुत्र, यीशु मसीह के मूल्य को और ऊँचा उठायें। “चाहे तुम खाओ या पीओ या जो कुछ भी करो, सब परमेश्वर की महिमा के लिए करो” (1 कुरिन्थियों 10:31)। “मेरी हार्दिक आशा और अभिलाषा यह है . . . मसीह की महिमा मेरी देह से सदा होती रही है . . . चाहे मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ” (फिलिपियों 1:20)। हर बात में परमेश्वर की महिमा होनी चाहिए। जीवन और मृत्यु दोनों में मसीह को ऊँचे पर उठाना चाहिए। यह परमेश्वर द्वारा मनुष्यों के जीवन के लिए दिया गया महान लक्ष्य है।

इसलिए, कोरोना वायरस में परमेश्वर का एक उद्देश्य यह है कि उसके लोग आत्मदया और भय को घात करें, और स्वयं को संकट की उपस्थिति में भले कार्यों के लिए दे दें। मसीही लोगों का झुकाव आवश्यकता की ओर होता है, न कि आराम की ओर। प्रेम की ओर होता है, न कि सुरक्षा की ओर। हमारा उद्धारकर्ता ऐसा ही है। और इसी के लिए वह मर भी गया।

आरम्भिक कलीसिया का उदाहरण

रोडनी स्टार्क ने अपनी पुस्तक *द ट्राइंफ ऑफ क्रिश्चियनिटी* (मसीहियत की विजय) में उल्लेख किया कि पहली शताब्दियों की मसीही कलीसिया में "वास्तव में क्रांतिकारी सिद्धांत यह था कि मसीही प्रेम और परोपकार को परिवार और विश्वासियों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए वरन् प्रत्येक ज़रुरतमन्द के लिए होना चाहिए।"[6]

165 और 251 ईसवी में रोमी साम्राज्य में दो बड़ी महामारियां आईं थीं। मसीही कलीसिया के सिवाए उस समाज में दया और बलिदान हेतु कोई सांस्कृतिक या धार्मिक आधार नहीं था। "ऐसा कोई विश्वास नहीं था कि देवताओं को मनुष्यों के जीवन की कोई चिन्ता भी है।"[7] और "दया को चरित्र में आभाव तथा तरस खाने को एक मानसिक कमी के रूप में देखा जाता था: क्योंकि दया में इस प्रकार की सहायता या राहत प्रदान की जाती है जिसे *कमाया नहीं गया* है, और यह न्याय के विपरीत है।"[8]

इसलिए, जबकि साम्राज्य का एक तिहाई हिस्सा बीमारी से नाश हो रहा था, तथा चिकित्सक लोग नगर से बाहर बने अपने बंगलों की ओर भाग गए। बीमारी के लक्षण वाले लोग घरों से बाहर निकाल दिए गए। पुजारियों ने मंदिरों को त्याग दिया। लेकिन *स्टार्क* बताते हैं कि उस समय, "मसीहियों ने यह दावा किया कि उनके पास उत्तर हैं और सबसे बढ़कर उन्होंने उचित कार्य भी किये।"[9]

उनके *उत्तरों* में सम्मलित था मसीह के द्वारा पापों की क्षमा और मृत्यु के बाद अनन्त जीवन की आशा। यह सन्देश बहुमूल्य था ऐसे समय में जब चिकित्सा असहाय थी और संसार में आशाहीनता थी।

यदि *कार्यों* की बात करें तो, बड़ी संख्या में मसीहियों ने बीमार और मरने वालों की देखभाल की। दूसरी महामारी के अंतिम चरण में, सिकंदरिया के

बिशप डायोनिसियस ने एक पत्र लिखा, जिसमें उन्होंने कलीसिया के सदस्यों की सराहना करी:

> हमारे अधिकांश भाइयों ने बिना अपनी चिन्ता किये सिर्फ दूसरों के विषय में सोचते हुए असीम प्रेम और निष्ठा को दिखाया है। संकट होने पर भी, उन्होंने बीमारों को सम्भाला, उनकी हर आवश्यकता को ध्यान में रखा और मसीह में उनकी सेवा करते हुए, उन्हीं के साथ इस जीवन से शान्ती तथा आनन्द के साथ कूच कर गए।[10]

सम्राटों की अज्ञानता को शान्त करना

समय के साथ, इस समाज के विपरीत, मसीह द्वारा प्रेरित बीमारों और गरीबों की चिन्ता के प्रभाव ने बहुत से मूर्तिपूजकों के मन को जीत लिया। दो शताब्दियों के बाद जब रोमी सम्राट *जूलियन* (332-363 ईसवी) ने प्राचीन रोमी धर्म में वापस नई जान को फूँकना चाहा, तब उसने मसीहियत को एक बढ़ते हुए खतरे के रूप में देखा। उसने हताशा में गलातिया के रोमी उच्च धर्मगुरु को यह लिखा:

> नास्तिकता [अर्थात, मसीही विश्वास] की विशेष प्रगति अनजान लोगों को दिखाई गई प्रेम पूर्वक सेवा और मृतकों को मिट्टी देने में उनकी देखभाल के द्वारा हुआ है। यह विचित्र बात है कि ऐसा एक भी यहूदी नहीं है जो भिखारी हो, और यह भी कि ईश्वर रहित गलीली लोग [अर्थात, मसीही जन] न केवल अपने ग़रीबों की देखभाल करते हैं वरन् हमारे ग़रीबों की भी देखभाल करते हैं; जबकि हमारे लोग व्यर्थ में सहायता के लिए हमारी ओर देखते हैं जिसे हमें उनको प्रदान करना चाहिए था।[11]

परमेश्वर द्वारा भेजे गए-कष्ट में राहत

इन दोनों बातों के बीच में कोई विरोधाभास नहीं है कि हम कोरोना वायरस को परमेश्वर के कार्य के रूप में देखें और साथ ही साथ मसीही लोगों को पुकारें कि वे इस आपदा के द्वारा जो कष्ट हुआ है उसे कम करने के लिए जोखिम उठायें। पतन के समय से ही जब परमेश्वर ने संसार को पाप और दुःख के अधीन किया था, उसने यह ठहराया है कि उसके लोग, नाश हो रहे दूसरे मनुष्यों को बचाने का प्रयास करेंगे, यद्यपि वही है जिसने नाश होने वालों के न्याय को नियुक्त किया है। परमेश्वर स्वयं इस संसार में लोगों को अपने ही उचित न्याय से बचाने के लिए यीशु मसीह में होकर के आया (रोमियो 5:9)। मसीह के क्रूस का यही अर्थ है।

इसलिए, परमेश्वर के लोगों के भले कार्यों में प्रार्थनाएं सम्मलित होंगी बीमारों की चंगाई के लिए और इस बात के लिए कि परमेश्वर अपने हाथ को थामे और इस महामारी को रोक दे, तथा परमेश्वर इस बीमारी का उपचार प्रदान करे। हम कोरोना वायरस के विषय में प्रार्थना करते हैं और उसके दुख को कम करने के लिए कार्य भी करते हैं, ठीक उसी प्रकार से जैसे *अब्राहम लिंकन* ने गृह-युद्ध की समाप्ति के लिए प्रार्थना की थी, और उसे समाप्त करने के लिए कार्य भी किया था, भले ही उसने इसे परमेश्वर के न्याय के रूप में देखा था:

> स्नेह से हम आशा करते हैं—लगन से हम प्रार्थना करते हैं—कि युद्ध की यह प्रबल विपत्ति शीघ्रता से चली जाए। फिर भी, यदि परमेश्वर की इच्छा है कि यह तब तक जारी रहे, जब तक कि गुलामों की ढाई सौ वर्षों से बेगार मेहनत द्वारा अर्जित किया गया सारा धन डूब न जाए, और जब तक कोड़ों के द्वारा खींचे गए लहू की एक-एक बूंद की कीमत

> तलवार द्वारा दूसरे लहू से नहीं चुका दी जाए। जैसा कि तीन हज़ार वर्ष पहले कहा गया था, तो वैसा अभी भी कहा जाना चाहिए कि "प्रभु के न्याय सदा ही सत्य और धार्मिकता से पूर्ण हैं।"

परमेश्वर अपना कार्य करता है—और उसमें से बहुत कुछ गुप्त है। और हमें अपना कार्य करना है। यदि हम उस पर भरोसा करते हैं और उसके वचन का पालन करते हैं, तो वह अपनी सार्वभौमिकता के द्वारा हमारी सेवा का उपयोग करेगा, अपनी बुद्धि से पूर्ण और भले उद्देश्यों को सम्भव करने के लिए।

अध्याय 11

सभी राष्ट्रों में पहुंचने के लिए जड़ों को हिलाना

उत्तर 6

कोरोना वायरस के द्वारा परमेश्वर संसार भर में बसे हुए मसीहियों की जड़ों को हिला रहा है, ताकि उनको एक नयी और अलग बात के लिए स्वतंत्र करे, और उन्हें मसीह के सुसमाचार के साथ संसार के उन लोगों के पास भेजे जिनके पास अभी सुसमाचार नही पहुँचा है।

कोरोना वायरस को *मिशन्स** के साथ जोड़ना विचित्र सी बात लग सकती है, क्योंकि थोड़े समय के लिए, कोरोना वायरस ने यात्रा, प्रवास और *मिशनरी* प्रगति को बंद कर दिया है। परन्तु मैं थोड़े समय के विषय में नहीं सोच रहा हूँ। परमेश्वर ने इतिहास में कष्ट और उथल-पुथल का उपयोग किया है अपनी कलीसिया को उन स्थानों तक ले जाने के लिए जहाँ उसे जाना

* मिशन्स का अर्थ यहाँ पर ऐसी सेवा है जहाँ एक व्यक्ति अपने स्थान को त्याग कर किसी ऐसे स्थान पर सुसमाचार प्रचार की सेवा के लिए जाता है जहाँ अभी तक सुसमाचार न पहुंचा हो।

चाहिए। मेरा विचार है कि वह ऐसा पुनः कोरोना वायरस के दीर्घकालिक प्रभाव के अंतर्गत करेगा।

सताव *मिशनरी* रणनीति के रूप में

उदाहरण के लिए, इस बात को देखिये कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को यरूशलेम से बाहर, यहूदिया और सामरिया में एक *मिशन* के लिए स्थानांतरित किया। यीशु ने अपने शिष्यों को निर्देश दिया था कि वे "यरूशलेम और. . . सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक उसके गवाह होंगे" (प्रेरितों के काम 1:8)। लेकिन प्रेरितों के काम 8 अध्याय तक ऐसा लगता है कि *मिशन* यरूशलेम में ही रुक गया था।

कलीसिया को *मिशन* के कार्य में लगाने के लिए क्या करना पड़ेगा? इसके लिए स्तिुफनुस की मृत्यु और उसके बाद आए सताव की आवश्यकता पड़ी। जैसे ही स्तिुफनुस शहीद हुआ (प्रेरितों के काम 7:60), एक सताव टूट पड़ा:

> उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर घोर अत्याचार आरम्भ हुआ, और प्रेरितों को छोड़ वे सब यहूदिया और सामरिया के समस्त प्रदेशों में तितर-बितर हो गए। . . . अतः जो तितर-बितर हुए थे, घूम-घूम कर वचन का प्रचार करने लगे। (प्रेरितों के काम 8:1-4)

परमेश्वर इस प्रकार अपने लोगों को एक स्थान से दूसरे स्थान ले गया—सताव और जीवन बलिदान के द्वारा। अन्ततः "यहूदिया और सामरिया" सुसमाचार सुन रहे थे। परमेश्वर के मार्ग हमारे मार्ग नहीं हैं। परन्तु उसका *मिशन* निश्चित है। यीशु ने भी यही कहा था। और उसका वचन विफल नहीं हो सकता है। "मैं अपनी कलीसिया बनाऊंगा और अधोलोक के फाटक उस पर प्रबल न होंगे" (मत्ती 16:18)। "राज्य का यह सुसमाचार सारे जगत में प्रचार किया

जाएगा, कि सब जातियों पर साक्षी हो" (मत्ती 24:14)। ध्यान दें यहाँ पर यह नहीं लिखा है कि "*सम्भवतः* प्रचार किया जायेगा।" किन्तु यहाँ लिखा है कि "प्रचार *किया जायेगा।"*

रुकावटें योजनाबद्ध प्रगति के लिए

हम सोच सकते हैं कि कोरोना वायरस की महामारी विश्व भर में *मिशन* कार्य के लिए एक रूकावट है। परन्तु मुझे इस बात पर संदेह है। परमेश्वर के मार्गों में अक्सर रुकावटें प्रतीत होती हैं जिनके परिणाम स्वरूप महान प्रगति होती है।

9 जनवरी, 1985 को, बुल्गारिया में एक कलीसिया के पास्टर *ह्रिस्टो कुलिचेव* को गिरफ्तार किया गया और जेल में डाल दिया गया। उसका अपराध केवल यह था कि उसने अपनी कलीसिया में सरकार के निर्देश के उल्लंघन में प्रचार किया था। और वह भी तब जबकि सरकार ने एक अन्य व्यक्ति को उस कलीसिया के पास्टर के रूप में नियुक्त कर दिया, जिसे उस मण्डली ने नहीं चुना था। उसके ऊपर चलाया गया मुकदमा स्पष्ट तौर से न्याय का उपहास था। और उसे आठ महीने जेल की सज़ा सुनाई गई। जेल में अपने समय के दौरान, उसने हर सम्भव तरीके से मसीह का प्रचार किया।

जब वह बाहर निकला, तो उसने यह लिखा, "कैदियों और जेलरों ने कई प्रश्न पूछे, और ऐसा हुआ कि हमारी आशा के विपरीत वहाँ जेल में हमारी सेवा कलीसिया से अधिक फलदायक थी। जेल में हमारी उपस्थिति से परमेश्वर की सेवा बेहतर हुई इस बात कि तुलना में कि अगर हम स्वतंत्र होते।"[12]

परमेश्वर के मार्ग अक्सर ऐसे ही होते हैं। कोरोना वायरस का पूरी दुनिया पर प्रभाव और इसकी गम्भीरता इतनी बड़ी है कि परमेश्वर इसको व्यर्थ नहीं जाने देगा। यह सम्पूर्ण विश्व में सुसमाचार प्रचार के उसके अटल उद्देश्य के

उपयोग में आयेगा। मसीह ने अपना लहू व्यर्थ में नहीं बहाया है। और प्रकाशितवाक्य 5:9 कहता है कि उस लहू से उसने "हर एक कुल, भाषा, लोग, और जाति में से परमेश्वर के लिए लोगों को मोल लिया है।" उसे उसकी पीड़ा का प्रतिफल मिलेगा। और यहाँ तक कि महामारियाँ भी उस महान आदेश को पूरा करने का कार्य करेंगी।

एक अंतिम प्रार्थना

हे पिता,

हम अपने उत्तम क्षणों में, आपके अनुग्रह से, गतसमनी में नहीं सो रहे हैं। हम जगे हुए हैं और आपके पुत्र की प्रार्थना को सुन रहे हैं। वह जानता है, अपने हृदय की गहराईयों से कि उसको दुख उठाना ही है। किन्तु अपने सिद्ध मनुष्यत्व में, वह पुकारता है, “यदि सम्भव हो, तो यह प्याला मुझ से टल जाए।”

उसी तरह, हम अपने हृदय की गहराईयों में जानते हैं, कि यह वैश्विक महामारी, आपकी बुद्धि में, भले और आवश्यक उद्देश्यों के लिए नियुक्त की गई है। हमें भी दुख उठाना होगा। आपका पुत्र तो निर्दोष था। लेकिन हम नहीं हैं।

फिर भी हम उसके साथ अपनी सिद्धता-से-कम मनुष्यत्व में, पुकारते हैं, “यदि सम्भव हो, तो यह प्याला हम से टल जाए।” हे प्रभु, जिस दर्दनाक, न्यायपूर्ण और करुणामयी कार्य को आपने करने का निर्णय लिया है, उसे शीघ्र कीजिए। न्याय में ठहरे मत रहिए। अपनी दया में देर मत कीजिए। हे प्रभु, अपनी करुणा के अनुसार, गरीबों को स्मरण रखिए। पीड़ितों की पुकार को मत

भूलिए। चंगाई प्रदान कीजिए। एक उपचार प्रदान कीजिए। हम प्रार्थना करते हैं कि—हम गरीब, असहाय प्राणियों को—इन दुखों से छुड़ाइए।

लेकिन हे प्रभु, हमारी दुगर्ति और शोक को व्यर्थ मत जाने दीजिए। अपने लोगों को शुद्ध कीजिए खोखले भौतिकवाद और मसीह-रहित मनोरंजन से जिसमें वह बेबसी से लिप्त हैं। शैतान के कांटो पर लगे हुए चारे का स्वाद हमारे मुख से हटाएँ। घमण्ड, घृणा और विधर्मी मार्गों की जड़ तथा बचे हुए भाग को हमसे काटकर निकालिए। हमें स्वयं पर क्रोध करने की क्षमता प्रदान कीजिए जब हम आपकी महिमा को तुच्छ ठहराएं। मसीह की सुन्दरता को देखने और आनन्द उठाने के लिए हमारे हृदयों की आंखों को खोलिए। हमारे हृदयों को अपने वचन, अपने पुत्र और अपने मार्गों की ओर लगाइए। हमें करुणामय साहस से भर दीजिए। और अपने लोगों की सेवा के तरीके के कारण अपने नाम को ऊँचा कीजिए।

अपने हाथ को महान जागृति के लिए इस नाश हो रहे संसार की ओर बढ़ाइए। काश प्रकाशितवाक्य के भयानक शब्द इस पीढ़ी के लिए न बोले जाएं: “फिर भी उन्होंने पश्चाताप नहीं किया।” जैसे आपने शरीरों पर प्रहार किया है, वैसे ही सो रहे प्राणों पर भी प्रहार कीजिए। ऐसा न होने दें कि वे घमण्ड और अविश्वास के अंधकार में सोते रहें। अपनी महान दया में, इन हड्डियों से कहिऐ, “जियो!” और लाखों लोगों के हृदयों और जीवनों को यीशु के असीम मूल्य की ओर फेरिये।

यीशु के नाम से, आमीन।

नोट्स

1. "1918 वैश्विक महामारी (एच1एन1 वायरस)," ("1918 Pandemic (H1N1 Virus") मार्च 20, 2019 को अपडेट किया गया, रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केन्द्र, https://www.cdc.gov/flu/pandemic-resources/1918-pandemic-h1n1.html.
2. हेनरी मार्टिन, *हेनरी मार्टन के पत्रिकाएं और पत्र (Journals and letters of Henry Martyn)* (न्यू यॉर्क: प्रॉटेस्टैन्ट एपीस्कोपल सोसायटी, 1861), 460.
3. मार्टिन, *पत्रिकाएं और पत्र,* 210.
4. जॉन लेनन, "इमैजिन," ("Imagine") जॉन लेनन, योको ओनो, और फिल स्पेकटर द्वारा प्रस्तुत, ऐबी रोड, लंडन, 1971.
5. सी. एस लूइस, *महिमा का भार और अन्य प्रचार* में "महिमा का भार" ("The Weight of Glory," in *The Weight of Glory and Other Addresses*) (1949 में दुबारा प्रकाशित, न्यू यॉर्क: हार्पर, 2009), 26.
6. रॉडनीय स्टार्क, *मसीहियत का विजय: यीशु आंदोलन कैसे दुनिया का सबसे बड़ा धर्म बना (The Triumph of Christianity: How the Jesus Movement Became the World's Largest Religion)* (न्यू यॉर्क: हार्पर, 2011), 113.
7. स्टार्क, *मसीहियत की विजय,* 115.
8. स्टार्क, *मसीहियत की विजय,* 112.
9. स्टार्क, *मसीहियत की विजय,* 116.
10. स्टार्क, *मसीहियत की विजय,* 117.
11. स्टीफन नील, *मसीही प्रसार सेवा का इतिहास (A History of Christian Missions), दूसरा प्रकाशन* (न्यू यॉर्क: पेन्विन, 1986), 37-38
12. हरबर्ट स्खोस्सबर्ग, *दुख उठाने के लिए बुलाए गए, विजयी होने के लिए बुलाए गए (Called to Suffer, Called to Triumph)* (पोर्टलैंड, और: मुल्टनोमाह, 1990), 230.

वचन सूची

उत्पत्ति

1:31 ……………. 62
3:1-19 ………… 61
50:20 …………. 48

निर्गमन

4:11 ……………. 41, 42
8:1-15 ………… 41
8:16-19 ………. 41
8:20-32 ………. 41
10:1-20 ………. 41
16:6-8 ………… 41

व्यवस्थाविवरण

32:39 …………. 43

यहोशू

10:12-13 ……… 41

रूत

1:20-21 ………. 37

1 शमूएल

2:2 ……………. 36

2 शमूएल

22:31 …………. 22

अय्यूब

1:1 ……………. 69-70
1:12 …………... 48, 65
1:21 …………... 42
1:22 …………... 42
2:6 ……………. 65
12:13 …………. 46
36:32 …………. 41
42:2 …………... 40

भजन संहिता

16:11 …………. 86
19:1 …………... 26
19:9 …………... 21
19:10 ………..... 22
31:19 …………. 34-35
33:10 …………. 42
33:11 …………. 22
34:8 ……………. 27
34:18-19 ……… 27-28
40:5 …………... 57
63:3 …………... 86
94:19 …………. 27

105:16 ………... 41
119:89 ………... 27
119:103 ………. 27
119:152 ………. 22
119:160 ………. 27
135:6 …………. 41
147:5 …………. 22, 46
147:8 …………. 41
147:16 ………… 41

नीतिवचन

3:5 ……………. 55
21:1 ……………. 42
28:26 …………. 55
30:5 ……………. 27

यशायाह

2:22 ……………. 56
8:12-13 ………...30
28:29 …………. 22
46:9-10 ………...40

यिर्मयाह

1:12 ……………. 40
15:16 …………. 22

विलापगीत

3:32-33 ………. 39

दानिय्येल

2:21 …………... 42
4:35 ……………. 41

योना

2:10 ……………. 41
4:6 ……………. 41
4:7 ……………. 41

मत्ती

4:23 …………... 42
5 ………………. 88
5:11-12 ………. 88
5:13-16 ………...88
5:16 ……………. 87
7:24 ……………. 22
8:15 ……………. 42
10:29 …………. 41
10:29-31 ……….49
10:37 …………. 80
13:13 …………. 24
15:14 …………. 24
16:18 …………. 97
22:37 …………. 80
24:7 ……………. 74
24:8 ……………. 74
24:14 …………. 97
24:44 …………. 75
25:31-32 ……….74

मरकुस

1:11 ……………. 31
7:37 ……………. 42
9:7 ……………. 31
13:33-37 ……….76

लूका

5:24-25 42
8:25 41
12:56-57 59
13:1-5 77-78
13:3 79
13:5 79
13:16 64
14:13-14 88
18:42 41
21:34 74
22:31 .... 48, 65

यूहन्ना

1:14 26
5:24 72
6:68 22
8:44 64
10:35 .... 21, 27
12:31 64
14:31 31

प्रेरितों के काम

1:8 96
1:11 73
4:27-28 42
5:19 41
7:60 96
8 96
8:1-4 96
10:38 64
12:23 70-71
17:25 34

रोमियों

1:18 71
1:19 25
1:21 25
1:22-23 81
1:23 36
1:27 71
3:23 36
4:20 35
5:3-5 58
5:9 93
5:12 61
5:16 63
8:1 .... 64, 72
8:20-22 62
8:20 63
8:21 63
8:21-23 75
8:22 74
8:23 63
8:28-30 50
8:32 46
8:35-37 47
8:38-39 48
11:33 .... 46, 57

1 कुरिन्थियों

10:31 90
15:10 83
15:55 64

2 कुरिन्थियों

1:8-9 83

4:4 .... 24, 64
6:10 .... 23, 38
12:7-9 84
12:7 .... 48, 65
12:9 84
12:15 16

गलातियों

6:10 90

इफिसियों

1:5 63
1:7 63
1:8-9 56
1:11 .... 41, 55
1:18 63
2:2 64
2:3 36
2:4-5 42
3:4 56
3:10 46

फिलिप्पियों

1:20 .... 85, 90
1:21 64
1:23 64
3:8 86
3:21 75

कुलुस्सियों

1:13 31

1 थिस्सलुनीकियों

5:4-10 76
5:9-10 13
5:9 64
5:15 90
5:21 59

2 तीमुथियुस

2:13 33
3:16 27

तीतुस

2:14 90

इब्रानियों

12:6 72

याकूब

4:13-15 .... 17-18, 42
4:15 43

1 पतरस

1:24-25 21
2:12 89
2:24 89-90
4:17-18 70
4:19 89

2 पतरस

1:21 27

1 यूहन्ना
4:1 59

प्रकाशितवाक्य
5:9 98
21:4 63

desiringGod

Everyone wants to be happy. Our website was born and built for happiness. We want people everywhere to understand and embrace the truth that God is most glorified in us when we are most satisfied in him. We've collected more than thirty years of John Piper's speaking and writing, including translations into more than forty languages. We also provide a daily stream of new written, audio, and video resources to help you find truth, purpose, and satisfaction that never end. And it's all available free of charge, thanks to the generosity of people who've been blessed by the ministry.

If you want more resources for true happiness, or if you want to learn more about our work at Desiring God, we invite you to visit us at desiringGod.org.

desiringGod.org

forthetruth.

There is a vast amount of faithful theological resources in English available across the globe. But the average Indian is unable to benefit from these resources for reasons such as: prohibitive cost, hard to find, difficult to procure, and inaccessible due to language and cultural differences. There is also a dearth of faithful resources created by and for the Indian church in English and various Indian vernaculars.

For the Truth is a publishing which exists to print, publish & distribute resources for the church.

We hope to:

1. Publish quality and affordable titles in English for the church in India.
2. Translate, publish and distribute both classic and contemporary titles from English into Indian vernaculars.
3. Develop, publish and distribute resources produced by local writers.

forthetruth.in

"ऐसे समय में हमें यह देखने को मिलता है कि यह संसार कितना क्षणभंगुर है। दृढ़ प्रतीत होने वाली नींवें अब हिल रही हैं। हमें यह प्रश्न पूछना चाहिए कि *क्या हमारे पैरों तले कोई दृढ़ चट्टान है? एक ऐसी चट्टान जिसे—कभी भी हिलाया नहीं जा सकता है?"*

जॉन पाइपर

सूत्रों के अनुसार 11 जनवरी, 2020 को कोरोना वायरस (COVID-19) के कारण चीन के वूहान प्रदेश में पहली मृत्यु हुई। 11 मार्च, 2020 तक *वर्ल्ड हेल्थ आर्गेनाइज़ेशन* ने एक वैश्विक महामारी की घोषणा कर दी। भय और अनिश्चिता के ऐसे वातावरण में, यह विचार करना कि परमेश्वर क्या कर रहा है एक स्वाभाविक बात है।

इस पुस्तक *कोरोना वायरस और मसीह* में जॉन पाइपर ने संसार भर के अपने पाठकों को आमंत्रित किया है कि वह एक दृढ़ चट्टान पर खड़े हों, जो कि यीशु मसीह है, जिसमे हमारी आत्माएं उस सार्वभौमिक परमेश्वर द्वारा संभाली जाती हैं जो हर बात को निर्धारित करता है, उस पर प्रभुता करता है और उस पर राज्य करता है अपने भले और कुशल उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए। कोरोना वायरस के द्वारा परमेश्वर क्या कर रहा है? पाइपर यह दिखाते हुए कि परमेश्वर इतिहास के इस समय में भी कार्य कर रहा है, इस प्रश्न के प्रतिउत्तर में बाइबिल से 6 उत्तर देते हैं।

जॉन पाइपर *डिज़ायरिंग गॉड* संस्था के संस्थापक और मुख्य शिक्षक हैं, वह बैतलहम बाइबल कालेज और *सेमिनरी* के कुलाधिपति भी हैं। उन्होंने तेंतीस वर्ष तक बैतलहम *बैप्टिस्ट चर्च* के वरिष्ठ पादरी के रूप में सेवा करी है, जो अमरीका के *मिनिसोटा* प्रदेश के *मिनियापोलिस* शहर में है। उन्होंने पचास से आधिक पुस्तकों को लिखा है जिनमें *डिज़ायरिंग गॉड, डोन्ट वेस्ट यॉर लाइफ* और *रीडिंग द बाइबिल सूपरनैचुरली* सम्मलित हैं।

मसीही जीवन / धर्मविज्ञान

forthetruth.

forthetruth.in

ISBN 978-1-4335-7359-0

50899

INR ₹200